Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 21

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

27 रमाज़न 1441 हिजरी कमरी 21 हिजरत 1399 हिजरी शमसी 21 मई 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

रमज़ान के इस आख़िरी अशरा में पहले से बढ़कर अल्लाह तआला के आगे झुकें और विनम्रतापूर्वक दुआएं करें और अल्लाह तआला से इस का रहम और फ़ज़ल मांगें। अल्लाह तआला हर अहमदी को इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेहत के बारे में सूचना

दिनांक 15 मई 2020 ई जुमअतुल मुबारक अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़ुत्बा जुमा नहीं दिया। परन्तु इस अवसर पर विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के नाम एक पैग़ाम इरशाद फ़रमाया जिसे मुहतरम मुनीर अहमद जावेद प्राईवेट सैक्रेटरी हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने एम.टी ए के माध्यम से जमाअत के लोगों के सामने पेश किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

मुझे अफ़सोस है कि आज मैं जुमा नहीं पढ़ा सकूँगा क्योंकि पिछले दिनों घर के सेहन में चलते हुए मेट (mat) से पांव को ठोकर लगने की वजह से पांव फिसला जिसकी वजह से पक्की जगह पर गिरने से माथे और नाक पर काफ़ी चोट आई है इसलिए जुमा पढ़ाना मुश्किल है। डाक्टर का भी यही मश्वरा है कि आराम किया जाए। दुआ करें अल्लाह तआला सम्पूर्ण सेहत प्रदान फ़रमाए और अगले जुमा को इंशा अल्लाह हाज़िर हो सकूं।

इसी तरह अब रमज़ान का आख़िरी अशरा है इस में जमाअत के लिए भी बहुत दुआ करें। अल्लाह तआला जमाअत को हर बुराई से बचाए और अपनी हिफ़ाज़त में रखे। पाकिस्तान में तो आजकल सियास्तदान भी और मीडिया भी जमाअत की मुख़ालिफ़त में बहुत तेज़ हुए हुए हैं। अल्लाह तआला और इस के रसूल हज़रत ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो के नाम पर सियासत खेल रहे हैं। और अहमदियों को बहुत ज़्यादा इस बुनियाद पर निशाना बनाने की कोशिश कर रहे हैं। अल्लाह तआला अहमदियों को और पूरी क़ौम को उनके इस खेल के बुरे प्रभावों से महफ़ूज़ रखे। बहरहाल उनके हर हमले के जवाब में हमारा काम दुआ करना और अल्लाह तआला के आगे झुकना है। रमज़ान के इस आख़िरी अशरा में पहले से बढ़कर अल्लाह तआला के आगे झुकें और विनम्रतापूर्वक दुआएं करें और अल्लाह तआला से इस का रहम और फ़ज़ल मांगें। अल्लाह तआला हर अहमदी को इस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

इस के बाद मुहतरम डाक्टर शब्बीर भट्टी साहिब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की मैडीकल रिपोर्ट से जमाअत को लोगों को सूचित किया

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेहत के बारे में सूचना

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्राहीम। अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातहू। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को गिरने से माथे और घुटने पर चोटें आई हैं। ख़ुदा तआला के ख़ास फ़ज़ल से ये सारी सतही रही हैं। और माथे और बाक़ी अंगों में कोई गहरी चोट नहीं आई। कुछ सूजन बाक़ी है लेकिन वह धीरे-धीरे कम हो रहा है। इंशा अल्लाह कामिल शिफ़ा हो जाएगी। हुज़ूर बिना तकलीफ़ के चल फिर रहे हैं और उमूमी हालत बहुत बेहतर है। अलहमदु लिल्लाह। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से विनम्रतापूर्वक निवेदन था कि कुछ दिन आराम फ़रमाएं और जुमा भी न पढ़ाऐं जो हुज़ूर ने रहम करते हुए स्वीकार फ़र्मा ली। जज़ाकमहुल्लाह

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेहत के बारे डाक्टर शब्बीर भट्टी साहिब की ताज़ा सूचना (17 मई 2020 दिन रविवार)

अल्लाह के फज़ल से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह की सेहत आज बहुत बेहतर रही। ज़ख्मों के दर्द में कमी आई है और माथे , नाक और घुटने के ज़ख्म तेज़ी से भर रहे हैं। अल्हम्दो लिल्लाह। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह डाक भी देख रहे हैं। और सब जमाअत के लोगों के लिए दुआएं भी कर रहे हैं। आप भी प्यार आक़ा के लिए दिल की गहराई से दुआऐं जारी रखें। कि अल्लाह तआला अपने विशेष फज़्ल से हुज़ूर को शीघ्र सेहत प्रदान करे ताकि जमाअत अगले जुमा अपने प्यारे आक़ा के दर्शन करे

जमाअत के लोग अपने निहायत शफ़ीक़ और प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफुतल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की शीघ्र पूर्ण सेहत के लिए विशेष दुआएं जारी रखें।

اَللّٰھُمَّ اَذْھِبِ الْبَاْسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِیْ لَا شِفَاءَ اِلَّا شِفَاءُکَ شِفَاءً کَامِلًا عَاجِلًا لَا یُغَادِرُ سَقَمًا

اَللّٰھُمَّ اَیِّدْ اِمَامَنَا بِرُوْحِ الْقُدُسِ وَکُنْ مَعَہٗ حَیْثُ مَا کَانَ وَانْصُرْہُ نَصْرًا عَزِیْزًا

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-4)

प्रत्येक वाकिफ़ा नौ तब्लीग़ का शौक़ पैदा करे और यह अह्द करे के उसने एक डच औरत को अहमदी बनाना है, अगर किसी को अहमदी भी नहीं बनाना तो आपके वाक़फ़ात नौ होने क्या लाभ

वाकिफ़ात नौ हॉलैंड की हुज़ूर अनवर के साथ क्लास और हुज़ूर अनवर की हिदायतें

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

30 सितम्बर 2019 ई दिनांक सोमवार

(हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ नेशनल मज्लिस आमला लज्ना इमाउल्लाह हॉलैंड की मीटिंग.....शेष)

एक लोकल सदर ने सवाल किया कि मेरी मजलिस में कुछ मेम्बरात का कहना है कि हम जमाअत तक अपना सम्बन्ध रखना चाहती हैं और जमाअत का चन्दा भी देती हैं लेकिन वे लज्ना इमा अल्लाह से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहतें और न ही लज्ना का चन्दा देती हैं

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जमाअत के निज़ाम की यही ख़ूबसूरती है कि जो लज्ना स्थापित की हुई है वह सीधा समय के ख़लीफ़ा के अधीन है तो फिर यह अपने अह्द बैअत के साथ मुनाफ़क़त करती हैं। चन्दा दें या न दें पहले उनको अहमदी बनाएँ। अगर चन्दा नहीं दे सकतीं तो मुझ से आज्ञा ले सकती हैं। उनकी यह सोच ग़लत है। समय के ख़लीफ़ा की बनाई हुई संस्था है। इस में शामिल होना पड़ेगा। अगर समय के ख़लीफ़ा से सम्बन्ध है और अहमदी हैं तो फिर मैंबर हैं

एक आमला मैंबर ने सवाल किया कि अगर किसी जमाअत की या ज़ैली संस्था के ओहदेदार के बहुत क़रीबी रिश्तेदार को जमाअत के निज़ाम से निकालने की सज़ा हो जाए तो इस ओहदेदार का रवैय्या इस निकलने वाले रिश्तेदार से क्या होना चाहिए

इसके जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया सज़ा यह तो नहीं कि जेल में डाल दें। सिर्फ सम्बन्ध विच्छेद होता है जैसा कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में हुआ था। असल मक़सद यह है कि सज़ा पाने वाले शख़्स को एहसास दिलाया जाए कि इस ने ग़लती की है। सज़ा बहरहाल इसलिए दी जाती है कि बेहतरी हो। क़रीबी रिश्तेदार जैसे माँ बाप, बहन भाई सम्बन्ध रख सकते हैं ताकि इस्लाह हो। चाची, मामी, फूफी न रखे ताकि ग़लती का एहसास हो और उसको समझाएँ कि तुम ने ग़लती की है। अब यह तो ओहदेदार ने ख़ुद देखना है कि जमाअत का हित मुक़द्दम है या ज़ाती रिश्तेदारी।

एक मैंबर ने यह सवाल किया कि क्या हम लज्ना की तस्वीरें जो कि स्तरी पर्दा में हों और दूर से खींची गई हूँ, उनको अपने रिसाला में प्रकाशित कर सकते हैं

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। रिसालों में नहीं लेकर आनी। प्रकाशित नहीं करनी। देखने वाले मर्दों की नीयत का नहीं पता। कई बार मुबाइयात अमरीकी और अफ्रीक़ी की तस्वीरे आ जाती हैं। उनको छूट है। लेकिन जन्मजात अहमदी की नहीं डालनी।

एक मैंबर ने सवाल किया कि अक्सर तब्लीग़ी मेहमान इंगलैंड या जर्मनी के जलसा पर ले जाते हैं लेकिन जमाअत के पास इतना बजट नहीं होता।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अपनी जमाअत से मदद लें। यूके वाले तो पैसे नहीं लेते। अगर जमाअती तौर पर तबशीर को सूचना कर दें तो वह प्रबन्ध कर देंगे

हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया गया कि कुछ ओहदेदार ऐसी हैं जो मस्जिद और प्रोग्रामों में तो पर्दा करके आती हैं लेकिन इस से बाहर पर्दा नहीं करतीं

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। उनको ओहदेदार नहीं बनाना। लेकिन उनसे काम ले सकते हैं कुछ तो सम्बन्ध रखना है। अगर मस्जिद में करती हैं तो कुछ तो पर्दा है। कम से कम मस्जिद में तो पर्दा करके आती हैं।

एक आमला मैंबर ने सवाल किया कि अगर नैशनल सदर या लोकल सदर से कोई राय का मतभेद करे या इस पर तन्क़ीद करे तो सदर का रवैय्या उस के साथ कैसा होना चाहिए और इस मैंबर का इताअत का स्तर कैसा होना चाहिए

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :अगर आपसी मश्वरे हो रहे हैं तो इस पर सकारात्मक मतभेद होता है तो ठीक है। टांगें खींचने वाले न हों। कोई मश्वरा है तो लिख कर दें। सदर का फ़ैसला होगा। वर्ना समय के ख़लीफ़ा को लिखें। समय के ख़लीफ़ा का फ़ैसला आख़िरी फ़ैसला होगा।

सदर साहिबा लज्ना ने निवेदन किया कि क्षेत्रीय और लोकल सतह पर मर्दों से सम्पर्क करना होता है। लेकिन मर्दों से काम करवाना अक्सर मुश्किल हो जाता है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मर्दों को सहयोग करना चाहिए। घरों में बहुत से समस्याएं आप लड़ झगड़ के हल करा लेती हैं तो यहां भी लड़ा करें।

नैशनल मज्लिस आमला लज्ना इमाउल्लाह हॉलैंड की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ यह मीटिंग 6 बजकर 5 मिनट तक जारी रही

क्लास वाक़फ़ात नौ

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर15 मिनट पर वाकिफ़ात नौ बच्चियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ क्लास शुरू हुई।

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिया हुदा अकमल ने की। इस के बाद उस का उर्दू अनुवाद प्रिया अमतुस्सबूह बाजवा ने पेश किया। इस के बाद प्रिया तसनीम अवैदह ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस का अरबी मतन पेश किया। और इस का निम्नलिखित उर्दू अनुवाद प्रिया नाइला फ़रहान ने पेश किया

"हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि वर्णन करते हैं कि एक आदमी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया। हे अल्लाह के रसूल कोई ऐसा कर्म बताइए जो मुझे जन्नत में ले जाए और आग से दूर कर आप ने फ़रमाया। अल्लाह तआला की इबादत कर, उस के साथ किसी को सम्मिलित न ठहरा, नमाज़ पढ़, ज़कात दे और सिला रहमी कर अर्थात रिश्तेदारों से प्यार तथा मुहब्बत से रह।"

(बुख़ारी, किताबुल अदब, बाब फ़ज़ल सिला रहम)

इस हदीस के बाद प्रिया मनाहल मन्सूर ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निम्नलिखित उद्धरण पेश किया

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: नमाज़ों को नियमित क्रम से पढ़ो। कुछ लोग सिर्फ एक ही वक़्त की नमाज़ पढ़ लेते हैं वह याद रखें कि नमाज़ें माफ़ नहीं होतीं। यहां तक कि पैग़म्बरों को माफ़ नहीं हुईं। एक हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक जमाअत आई। उन्होंने नमाज़ की माफ़ी चाही। आप ने फ़रमाया कि जिस मज़हब में कर्म नहीं वह मज़हब कुछ नहीं इसलिए इस बात को ख़ूब याद रखो और अल्लाह तआला के आदेशों के अनुसार अपने कर्म करो।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 263)

इस के बाद प्रिया ताहिरा अलहदोशी ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का निम्नलिखित मंजूम कलाम अच्छी आवाज़ से पेश किया

वह देखता है ग़ैरों से क्यों दिल लगाते हो
जो कुछ बुतों में पाते हो इस में वह क्या नहीं

इस के बाद प्रिया रमीज़ा शब्बीर ने लज्ना इमाउल्लाह हॉलैंड की 50 वर्षीय जुबली 1969-2019 ई के हवाला से एक परिचय पेश करते हुए बताया: अल्लाह के फ़ज़ल से इस साल लज्ना इमाउल्लाह हॉलैंड अपनी 50 वर्षीय जुबली मना रही है। आज हम लज्ना इमाउल्लाह हॉलैंड की तारीख़ में से अहमदियत स्वीकार करने वाली पहली पाँच डच औरतों का संक्षिप्त परिचय करवाएंगे। अगर हॉलैंड में जमाअत अहमदिया की तारीख़ का जायज़ा लें तो शुरू में यहां कोई मस्जिद या मिशन हाऊस

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अब्दुल रहमान रज़ि कहते हैं कि मेरा इशारा करना था कि वे दोनों बच्चे बाज़ की तरह झपटे और दुश्मन की सफ़ें काटते हुए एक क्षण में वहां पहुंच गए और इस तेज़ी से वार किया कि अबु-जहल और इस के साथी देखते के देखते रह गए और अबुजहल मिट्टी पर था।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबी हज़रत मआज़ बिन हारिस रज़ी अल्लाह अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

दो मुस्लमान नौजवानों के हाथों कुफ्फार के सरदार अबुजहल की हलाकत का वर्णन।

ख़िलाफ़त की इताअत करने वाले और आशिक़ ,दिलेर, बहादुर और कलिमा की हिफ़ाज़त करने वाले, अल्लाह तआला की राह में कैदी, सिलसिला के वफादार ख़ादिम , अमला हिफ़ाज़त ख़ास के कारकुन आदरणीय राना नईम-उद्दीन साहिब की वफ़ात पर उनका ज़िक्र ख़ैर

"मैंने उनके चेहरे पर हमेशा बड़ी सन्तोष देखा और ख़िलाफ़त के लिए मुहब्बत देखी है।"

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 अप्रैल 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ
عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज बदरी सहाबा रज़ि में से हज़रत मआज़ बिन हारिस रज़ि का मैं वर्णन करूँगा। हज़रत मआज़ का सम्बन्ध अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू मालिक बन नज्जार से था। हज़रत मआज़ के पिता का नाम हारिस बिन रफ़ाइह था। उनकी माता का नाम अफरा बिन्त उबैद था। हज़रत मऊज़ रज़ि और हज़रत औफ़ रज़ि उनके भाई थे। ये तीनों भाई अपने पिता के इलावा अपनी माता की तरफ़ भी मंसूब होते थे और उन तीनों को बनू अफरा भी कहा जाता था। हज़रत मआज़ और उनके दो भाई हज़रत औफ़ रज़ि और हज़रत मऊज़ रज़ि जंग बदर में शामिल हुए। हज़रत औफ रज़ि और हज़रत मऊज़ रज़ि दोनों जंग बदर में शहीद हो गए मगर हज़रत मआज़ बाद की समस्त जंगों में भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शामिल रहे। एक रिवायत के अनुसार हज़रत मआज़ बिन हारिस रज़ि और हज़रत राफ़े बिन मालिक ज़ुरक़ी रज़ि इन अव्वलीन अन्सार में से हैं जो हुज़ूर अकरम पर मक्का में ईमान लाए थे और हज़रत मआज़ इन आठ अन्सार में शामिल हैं जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर बैअत उक़बा औला के अवसर पर मक्का में ईमान लाए। इसी तरह बैअत उक़बा सानिया में भी हज़रत मआज़ हाज़िर थे। हज़रत मुअमिर बिन हारिस रज़ि जब मक्का से हिज्रत कर के मदीना पहुंचे तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके और हज़रत मआज़ बिन हारिस रज़ि के मध्य भाईचरा स्थापित फरमाया।

(उसदुल ग़ाबह भाग 5 पृष्ठ 190 – 191 हज़रत मुआज़ बिन अल हारिस बिन रिफाअ दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 374 हज़रत मुआज़ बिन अल दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

अबुजहल के क़तल का विस्तार यद्यपि पहले पिछले साल के एक ख़ुत्बे में कुछ हद तक वर्णन हो चुकी है। (ख़ुत्बा जुमअः 05 अप्रैल 2019 ई बहवाला अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 26 अप्रैल 2019 ई) लेकिन यहां भी यह वर्णन करता हूँ। यह भी ज़रूरी है क्योंकि हज़रत मआज़ से भी इस का सम्बन्ध है और यह बुख़ारी की रिवायते हैं जो वर्णन करूँगा और सार तो उनका वर्णन नहीं हो सकता , बुख़ारी की पूरी रिवायत ही पढ़नी होगी।

सालिह बिन इब्राहीम अपने दादा हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ि से रिवायत करते हैं कि उन्होंने बताया कि मैं बदर की लड़ाई में सफ़ में खड़ा था कि मैंने अपने दाएं बाएं नज़र डाली तो क्या देखता हूँ कि दो अन्सारी लड़के हैं। उनकी उमरें छोटी हैं। मैंने आरज़ू की कि काश में ऐसे लोगों के बीच होता जो उन से ज़्यादा जवान,तंदरुस्त होते। इतने में उनमें से एक ने मुझे हाथ से दबा कर पूछा कि चाचा क्या आप अबुजहल को पहचानते हैं? मैंने कहा हाँ भतीजे। तुम्हें इस से क्या काम है? उसने कहा मुझे बतलाया गया है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देता है और उस ज़ात की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है अगर मैं उस को देख पाओं तो मेरी आँख उस की आँख से जुदा न होगी जब तक हम दोनों में से वह न मर जाए जिसकी मुद्दत पहले मुक़द्दर है। मैं इस पर बड़ा हैरान हुआ। फिर दूसरे ने मुझे हाथ से दबाया और उसने भी मुझे इसी तरह पूछा। अभी थोड़ा अरसा गुज़रा होगा कि मैंने अबुजहल को लोगों में चक्कर लगाते देखा। मैंने कहा देखो वह है तुम्हारा साथी जिसके बारे में तुम ने मुझ से पूछा था। यह सुनते ही वे दोनों जल्दी से अपनी तलवारें लिए उस की तरफ़ लपके और इस पर हमला कर के दोनों ने उसे क़तल कर डाला। फिर वे दोनों लौट कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आप को ख़बर दी। आप ने पूछा तुम में से किस ने उस को मारा है। दोनों ने कहा मैंने उस को मारा है। आप ने पूछा क्या तुम ने अपनी तलवारें पोंछ कर साफ़ कर ली हैं? उन्होंने कहा नहीं। आप ने तलवारों को देखकर फ़रमाया कि तुम दोनों ने ही इस को मारा है। इस का सामान ग़नीमत मुआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि को मिलेगा और इन दोनों का नाम मआज़ था। मुआज़ बिन अफ़रा रज़ि और मुआज़ बिन अमरो बिन जमोह रज़ि। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सही अल्बुख़ारी किताब फ़र्ज़ अल्ख़मीस बाब मन लम यख़मस अलअसलाब हदीस 3141)

हज़रत अनस रज़ि बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग बदर के दिन फ़रमाया कौन देखेगा कि अबुजहल का क्या हाल हुआ है? हज़रत इब्ने मसूद रज़ि गए और जा कर देखा कि इस को अफरा के दोनों बेटों मआज़ और मुअव्वज़ ने तलवारों से मारा है कि वह मरने के क़रीब हो गया है। हज़रत इब्ने मसूद रज़ि ने पूछा क्या तुम अबु जहल हो? हज़रत इब्ने मसूद रज़ि कहते हैं उन्होंने अबु जहल की दाढ़ी पकड़ी। अबु जहल कहने लगा क्या इस से भी बढ़कर कोई आदमी है जिसको तुमने मारा या यह कहा कि इस आदमी से बढ़कर कोई है जिसको उस की क़ौम ने मारा हो?

(सही अलबख़ारी किताबुल अलमग़ाज़ी बाब क़तल अबी जहल हदीस 3962)

बुख़ारी की जो रिवायत है इस हदीस की व्याख्या में हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली अल्लाह शाह साहिब रज़ि वर्णन करते हैं कि कुछ रिवायतों में है कि अफ़रा के दो बेटों (मुअव्वज़ रज़ि और मआज़ रज़ि) ने अबुजहल को मौत के क़रीब पहुंचा दिया था। इस के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने इस का सिर तन से जुदा किया था। इमाम इब्न हिज्र ने इस एहतिमाल का इज़हार किया है कि मआज़ बिन अमरो रज़ि और मुआज़ बिन अफ़रा रज़ि के बाद मुअव्वज़ बिन अफ़रा रज़ि ने भी इस पर वार क्या होगा।

(सही बुख़ारी जिल्द 5 पृष्ठ 491 हाशिया, उर्दू अनुवाद प्रकाशक नज़ारत इशाअत रब्वह)

जंग बदर के अवसर पर अबुजहल के क़तल में कौन कौन शामिल था। इस के बारे में एक जगह विस्तार यूं मिलता है

इब्न हिश्शाम ने अल्लामा इब्न इसहाक़ से रिवायत की है कि मुआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि ने अबुजहल की टांग काटी थी जिसके नतीजे में वह गिर गया और इक्रिमा बिन अबुजहल ने हज़रत मआज़ के हाथ पर तलवार मारी जिसके नतीजे में वह हाथ या बाज़ू अलग हो गया। फिर मुओज़ बिन अफ़रा रज़ि ने अबुजहल पर हमला किया जिसके नतीजा में वह नीचे गिर गया और इस में ज़िन्दगी की कुछ रमक़ अभी बाक़ी थी कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने इस का सिर तन से जुदा कर दिया जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें मक़्तूलीन में अबुजहल को तलाश करने का हुक्म दिया था। अर्थात जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको हुक्म दिया था कि अबुजहल को मक़्तूलीन में तलाश करें तो उस वक़्त अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ने इस का सिर तन से जुदा किया। सही मुस्लिम की हदीस के अनुसार अफरा के दो बेटों ने अबुजहल पर हमला किया था यहां तक कि वह मर गया। इसी तरह बुख़ारी में बाब क़तल अबी जहल में भी ऐसा ही वर्णन है। इमाम कुरतबी के निकट यह वहम है कि अफरा के दो बेटों ने अबुजहल को क़तल किया था। वह कहते हैं कि कुछ रावियों पर मआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि मुश्तबा हो गए अर्थात मआज़ बिन अफ़राय रज़ि के स्थान पर वह मआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि थे जिन्हें लोग समझे कि मआज़ बिन अफ़राय रज़ि हैं। कहते हैं मआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि मआज़ बिन अफ़राय रज़ि के साथ मुश्तबा हो गए हैं। अल्लामा इब्न अलजोज़ी कहते हैं कि मआज़ बिन जमूह रज़ि, अफरा की औलाद में से नहीं और मआज़ बिन अफ़राय रज़ि अबुजहल को क़तल करने वालों में शामिल था। शायद मआज़ बिन अफरा का कोई भाई या चाचा उस वक़्त मौजूद हो या रिवायत में अफरा के एक बेटे का वर्णन हो और रावी ने ग़लती से दो बेटों का कह दिया हो। बहरहाल अबू उम्र कहते हैं कि इस रिवायत की निसबत हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि की हदीस ज़्यादा सही है जिस में है कि इब्न अफरा ने अबुजहल को क़तल किया था अर्थात अफरा का एक बेटा था। इबन तै कहते हैं कि इस बात का होना मौजूद है कि दोनों माऊज़ अर्थात मआज़ बिन अमरो बिन जमूह रज़ि और मआज़ बिन अफ़राय रज़ि माँ की तरफ़ से भाई हों या दोनों रज़ाई भाई हों। अल्लामा दाऊदी ने अफरा के दोनों बेटों से मुराद सहल और सुहेल लिए हैं और कहा जाता है कि वे दोनों मऊज़ दूसरे हैं।

(उम्दतुल कारी भाग 15 पृष्ठ 100-101 प्रकाशन दारुल फ़िक्र बेरूत)

बहरहाल ये रिवायतें आती हैं कि तीन ने क़तल किया। कुछ में दो ने और उनमें हज़रत मआज़ बिन हारिस रज़ि का भी वर्णन मिलता है

हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने जंग बदर के जो हालात लिखे हैं और जिस में अबुजहल के क़तल की घटना लिखी है इस का वर्णन इस तरह किया है कि

"मैदान जंग में ख़ून की होली का मैदान गर्म था। मुस्लमानों के सामने उनसे तीन गुणा अधिक जमाअत थी।' तीन गुना जमअत थी "जो हर किस्म के युद्ध के सामान से सुसज्जित हो कर इस इरादा के साथ मैदान में निकली थी कि इस्लाम का नामो निशान मिटा दिया जाए और मुस्लमान बेचारे संख्या में थोड़े, सामान में थोड़े, ग़ुर्बत और बेवतनी के सदमों के मारे हुए ज़ाहिरी साधनों की दृष्टि से मक्का वालों के सामने कुछ मिन्टों का शिकार थे मगर तौहीद और रिसालत की मुहब्बत ने उन्हें मतवाला बना रखा था और इस चीज़ ने जिससे ज़्यादा ताक़तवर दुनिया में कोई चीज़ नहीं अर्थात ज़िन्दा ईमान ने उनके अंदर एक आदत से हट कर ताक़त भर दी थी। वह उस वक़्त जंग के मैदान में धर्म की ख़िदमत का वह नमूना दिखा रहे थे जिसकी तुलना नहीं मिलती। हर इक शख़्स दूसरे से बढ़कर क़दम मारता था और ख़ुदा की राह में जान देने के लिए बेक़रार नज़र आता था। हमज़ा रज़ि और अली रज़ि और ज़ुबेर रज़ि ने दुश्मन की सफ़ों की सफ़ें काट कर रख दें। अन्सार के जोश इख़लास की यह अवस्था था कि अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़ि रिवायत करते हैं कि जब आम जंग शुरू हुई तो मैं ने अपने दाएं बाएं नज़र डाली मगर क्या देखता हूँ कि अन्सार के दो नौजवान लड़के मेरे पहलू के साथ खड़े हैं। उन्हें देखकर मेरा दिल कुछ बैठ सा गया क्योंकि ऐसी जंगों में दाएं बाएं के साथियों पर लड़ाई का बहुत भरोसा होता था और वही शख़्स अच्छी तरह लड़ सकता है जिसके पहलू सुरक्षित हों। मगर अब्दुर्रहमान रज़ि कहते हैं कि मैं इस ख़्याल में ही था कि इन लड़कों में से एक ने मुझसे धीरे से पूछा कि मानो वह दूसरे से अपनी यह बात छुपाए रखना चाहता है।' यह चाहता है कि दूसरे को पता न लगे जो दूसरी तरफ़ खड़ा है "कि चाचा वह अबू जहल कहाँ है जो मक्का में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दुख दिया करता था। मैं ने ख़ुदा से अहद किया हुआ है कि मैं उसे क़तल करूँगा या कतल करने की कोशिश में मारा जाऊँगा। मैं ने अभी उस का जवाब नहीं दिया था। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ कहते हैं कि मैं ने अभी जवाब नहीं दिया था। कि दूसरी तरफ़ से दूसरे ने भी इसी तरह धीरे से यही सवाल किया। मैं उनका यह साहस देखकर हैरान सा रह गया क्योंकि अबुजहल गोया लश्कर का सरदार था और इस के चारों तरफ़ अनुभव वाले सिपाही जमा थे। मैंने हाथ से इशारा करके कहा कि वह अबुजहल है। अब्दुल रहमान रज़ि कहते हैं कि मेरा इशारा करना था कि वे दोनों बच्चे बाज़ की तरह झपटे और दुश्मन की सफ़ें काटते हुए एक आन की आन में वहां पहुंच गए और इस तेज़ी से वार किया कि अबुजहल और इस के साथी देखते के देखते रह गए और अबुजहल मिट्टी पर था। इक्रिमा बिन अबुजहल भी अपने बाप के साथ था वह अपने बाप को तो बचा न सका मगर उसने पीछे से मआज़ पर ऐसा वार किया कि इस का बायां बाज़ू कट कर लटकने लगा। मआज़ ने इक्रिमा का पीछा किया मगर वह बच कर निकल गया चूँकि कटा हुआ बाज़ू लड़ने में रोक होता था। मआज़ ने उसे ज़ोर से खींच कर अपने जिस्म से अलग कर दिया और फिर लड़ने गए।"

(सीरत ख़ातमुल अंबिया लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 362)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो घटना को वर्णन करते हुए इस तरह बयान फ़रमाते हैं कि

"अबुजहल जिसकी पैदाइश पर हफ़्तों ऊंट ज़िबह कर के लोगों में गोश्त तक़सीम किया गया था। जिसकी पैदाइश पर ढोल की आवाज़ से मक्का की फ़िज़ा गूंज उठी थी। बड़े ढोल धमके बजाए जा रहे थे और बड़े बाजे बजाए जा रहे थे, दफ़ बजाय जा रहे थे और इस की जन्म पर बड़ी ख़ुशी मनाई जा रही थी कि मक्का की फ़िज़ा भी गूंज उठी थी। फिर लिखते हैं कि "बदर की लड़ाई में जब मारा जाता है तो पंद्रह पंद्रह साल के दो अन्सारी छोकरे थे जिन्होंने उसे ज़ख़मी किया था। हज़रत अबदुल्लाह बिन मसूद रज़ि फ़रमाते हैं कि जब जंग के बाद लोग वापस जा रहे थे तो मैं मैदान में ज़ख़्मियों को देखने के लिए चला गया। आप भी मक्का के ही थे इसलिए अबुजहल आप को अच्छी तरह जानता था। आप फ़रमाते हैं कि मैं मैदान जंग में फिर ही रहा था क्या देखता हूँ कि अबुजहल ज़ख़्मी पड़ा कराह रहा है। जब मैं इस के पास पहुंचा तो उसने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा कि मैं अब बचता नज़र नहीं आता। तकलीफ़ ज़्यादा बढ़ गई है। तुम भी मक्का वाले हो। मैं यह इच्छा करता हूँ कि तुम मुझे मार दो ताकि मेरी तकलीफ़ दूर हो जाए लेकिन तुम जानते हो कि मैं अरब का सरदार हूँ और अरब में यह रिवाज है कि सरदारों की गर्दनें लंबी कर के काटी जाती हैं और यह मक़्तूल की सरदारी की निशानी होती है। मेरी यह इच्छा है कि तुम मेरी गर्दन लंबी कर के काटना। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि फ़रमाते हैं कि मैं ने इस की गर्दन ठोढ़ी से काट दी।" ठोढ़ी के क़रीब से काटी "और कहा तेरी यह आख़िरी हसरत भी पूरी नहीं की जाएगी। अब अंजाम के लिहाज़ से देखो तो अबुजहल की मौत कितने अपमान की मौत थी। जिसकी गर्दन अपनी ज़िन्दगी में हमेशा ऊंची रहा करती थी वफ़ात के वक़्त उस की गर्दन ठोढ़ी से काटी गई और इस की यह आख़िरी हसरत भी पूरी न हुई।"

(तफ़सीर कबीर भाग 7 पृष्ठ 101)

हज़रत रुबय्या बिनत मुअव्विज़ से रिवायत है कि मेरे चाचा हज़रत मुआज़ बिन

अफ़राय रज़ि ने मुझे कुछ ताज़ा खजूरें देकर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में भेजा तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे ज़ेवर अता फ़रमाया जो बहरीन के हाकिम ने आप को बतौर तोहफा भेजा था। एक और रिवायत में है कि हज़रत रुरुबय्या बिनत मुअव्विज़ रज़ि से रिवायत है कि मेरे चाचा हज़रत मुआज़ रज़ि ने मेरे हाथ एक तोहफा नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में भेजा तो आप ने उसे ज़ेवर प्रदान फ़रमाया जो बहरीन के हाकिम की तरफ़ से आप को मिला था। अल्लामा इबन असीर लिखते हैं कि बहरीन के हाकिम और अन्य बादशाहों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में तब तोहफ़े इत्यादि भेजे थे जब इस्लाम वुसअत धारण कर चुका था और आप ने बादशाहों के नाम पत्र लिखे थे और उन्हें तोहफ़े प्रदान फ़रमाए थे। तो उन्होंने भी आपकी ख़िदमत में पत्र लिखे और अपने तोहफ़े भिजवाए।

(उसदुल ग़ाबह भाग 5 पृष्ठ 192 हज़रत मुआज़ बिन अल हारिस बिन रिफ़ाह' दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

हज़रत मआज़ बिन हारिस रज़ि ने चार शादियां की थीं जिनकी विवरण यह है। हबीबा बिन्त केस। उनसे एक बेटा उबैदुल्लाह पैदा हुआ। दूसरी शादी उम्मे हारिस बिन्त सबरह से थी उनसे हारिस , औफ़, सलमा, उम्मे अबदुल्लाह और रमला पैदा हुए। उम्मे अब्दुल्लाह बिन्त नुमेर तीसरी बीवी थीं। उनसे इब्राहीम और आयशा पैदा हुए। उम्मे साबित रमला बिन्त हारिस चौथी थीं उनसे सारा पैदा हुईं

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 373 – 374 हज़रत मुआज़ बिन अल दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 1990 ई)

अल्लामा इब्न असीर ने अपनी पुस्तक उसदुल ग़ाबह में हज़रत मआज़ की वफ़ात के बारे में विभिन्न बातें लिखी हैं

एक कथन के अनुसार हज़रत मआज़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हो जंग बदर में ज़ख़्मी हुए और मदीना वापस आने के बाद इन ज़ख़्मों की वजह से उनकी वफ़ात हुई। एक कथन के अनुसार वह हज़रत उसमान रज़ि के दौर ख़िलाफ़त तक ज़िन्दा रहे। एक कथन के अनुसार वह हज़रत अली रज़ि के दौर ख़िलाफ़त तक ज़िन्दा रहे। उनकी वफ़ात हज़रत अली रज़ि और अमीर मुआविया के मध्य जंग सिफ्फीन के दौरान हुई। जंग सिफ्फीन 36 और 37 हिज्री में हुई थी और हज़रत मुआज़ रज़ि ने हज़रत अली रज़ि की तरफ़ से जंग में की थी।

(उसदुल ग़ाबह भाग 6 पृष्ठ 191 हज़रत मुअज़ बिन अल हारिस बिन रिफ़ाह दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत लबनान 2003 ई)

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 1409-1410 हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा दारुल जैल बेरूत)

बहरहाल उनकी वफ़ात के बारे में विभिन्न रिवायतें हैं कई बातें जो हैं उनसे यही पता लगता है और अगर यह वही हैं तो उनकी औलाद और बीवियों को अगर देखा जाए तो उन्होंने लम्बी ज़िन्दगी पाई थी।

इन सहाबी के वर्णन के बाद में अब आदरणीय राना नईमुद्दीन साहिब इब्न आदरणीय फ़िरोज़ुद्दीन मुंशी साहिब का वर्णन करूँगा जिनकी 09 अप्रैल को वफ़ात हुई थी। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। बड़े अर्से से बीमार थे। विभिन्न बीमारियों से कई बार हस्पताल जाते थे। डाक्टर कहते थे अब आख़िरी वक़्त है फिर अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़र्मा देता था, तो ठीक हो के आ जाते थे और जब भी ठीक होते थे, चलने के योग्य होते थे तो यहां मस्जिद में भी आ जाया करते थे। बहरहाल उनकी यह आख़िरी बीमारी जान-लेने वाली साबित हुई और उनकी वफ़ात हुई।

राना साहिब का जन्म जो काग़ज़ों के अनुसार है 1934 ई का है और कुछ रिवायतों के अनुसार 1930 ई या 32 ई की बनती है। बहरहाल काग़ज़ों के अनुसार 1934 ई की है। इस लिहाज़ से 86 साल उम्र थी। उनके ख़ानदान में अहमदियत का आरम्भ उनके पिता आदरणीय फ़िरोज़ दीन साहिब के मध्यम से हुआ था जिन्होंने 1906 ई में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत ख़त के माध्यम से बैअत की थी और फिर देश के बंटवारे के बाद जब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की पार्टीशन हुई है यह ख़ानदान पाकिस्तान शिफ़्ट हो गया और पहले लाहौर में ही रहे। फिर1948 ई में राना साहिब रब्वह आ गए। फिर उन्होंने अपने आपको फुर्क़ान बटालियन के लिए पेश किया और फुर्क़ान बटालियन के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने राना साहिब को मीरपुर ख़ास के क़रीब ज़मीनों पर भिजवा दिया जहां यह कुछ साल रहे। निज़ाम वसीयत में बहुत पुराने शामिल हैं। 1951 ई से उनकी वसीयत है। उनकी पत्नी का नाम सारा प्रवीन था जो हज़रत चौधरी दौलत ख़ान साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पोती थीं। फिर उनके बारे में दफ़्तर का जो रिकार्ड है अमला हिफ़ाज़त ख़ास का जो ऑफ़िस आर्डर का रजिस्टर है इस के अनुसार राना नईमुद्दीन का 3 अगस्त1954 ई को रिज़र्व आन डयूटी के तौर पर तक़र्रुर हुआ और इस के बाद फिर नवम्बर 1955 ई से11 मई 1959 ई तक अमला हिफ़ाज़त ख़ास में बतौर गार्ड रहे। जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो तफ़सीर के काम के सिलसिले में नख़ला, जाबा जाया करते थे और कई कई महीने वहां निवास फ़रमाया करते थे तो मरहूम की भी इस वक़्त वहां हिफ़ाज़त और जनरेटर की देख-भाल की डयूटी थी। वहां बिजली तो थी नहीं डीज़ल का जनरेटर चलता था। प्राय यह एक छोटी सी जगह आबाद की गई थी और इस की आबादी की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी थी।

दफ़्तर वसीयत के रिकार्ड के अनुसार 1978 ई में अमला हिफ़ाज़त से फ़ारिग़ हुए और फिर हड़प्पा ज़िला साहीवाल चले गए और इस के बाद साहीवाल मस्जिद में बतौर ख़ादिम मस्जिद ख़िदमत करते रहे। इस दौरान अक्तूबर 1984 ई में अहमदिया बैयतुल ज़िकर साहीवाल पर जब विरोधियों ने हमला किया तो यह इस में हिफ़ाज़ती डयूटी पर मामूर थे और उन्होंने उस का जवाब दिया तो राना नईमुद्दीन साहिब के साथ कुल ग्यारह लोगों के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दर्ज हुआ और इस तरह राना साहिब को 26 अक्तूबर 1984 ई से मार्च 1994 ई तक अल्लाह की राह में क़ैद रहने की सआदत नसीब हुई।

पुलिस ने यह हमला करने वालों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करने के स्थान पर हमारे ग्यारह जमाअत के लोगों के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दर्ज किया और उनको सज़ा हुई। यह जो केस था वह मिल्ट्री कोर्ट को रेफर (refer) कर दिया गया। यह ज़िया उल हक़ के ज़माना की ख़ास अदालत थी जहां 16 फरवरी 1985 ई से बाक़ायदा समाअत शुरू हुई और जून, 1 जून 1985 ई तक यह सुनवाई जारी रही और इस में पहले तो कुल 11 लोग थे लेकिन बाद में फिर 7 लोग जिनमें राना नईमुद्दीन साहिब भी शामिल थे उनका फ़ैसला pending कर दिया गया। दो बाहर देश चले गए थे और दो को बरी कर दिया गया था तो ये 7 लोग जो थे उनका मामला पेंडिंग था। बाद में इसी कोर्ट ने जो स्पैशल मिल्ट्री कोर्ट था उसने इलयास मुनीर साहिब मुरब्बी सिलसिला और राना नईमुद्दीन साहिब को मौत की सज़ा सुना दी और बाक़ी जो पाँच मुल्ज़िमान थे उनको 25-25 साल क़ैद की सज़ा सुना दी गई। बहरहाल इस फ़ैसला के ख़िलाफ़ अपील पर लाहौर हाईकोर्ट ने मार्च 1994 ई में रिहाई का हुक्म दिया और काग़ज़ों की पूर्णता पर 19 मार्च 1994 ई को उनकी रिहाई हुई और इस तरह यह जो हमारे असीर थे उनको साढ़े नौ साल अल्लाह तआला की राह में क़ैद बर्दाश्त करने का सौभाग्य हासिल हुआ, क़ैदी रहने का

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

सौभाग्य हासिल हुआ। मुख़ालिफ़ीन की तरफ़ से इन कैदियों की रिहाई के बारे में हाइकोर्ट के फ़ैसला के ख़िलाफ़ सुप्रीमकोर्ट में अपील दायर की गई और इस की हेयरिंग (hearing)का मई 2013 ई में आग़ाज़ हुआ ताहम ये दोनों देश के बाहर थे तो कोई पेश-रफ़्त नहीं हुई और अभी तक यह केस पेंडिंग है।

क़ैद के दौरान पुलिस की तरफ़ से विशेष रूप से अत्याचार किया जाता रहा और उनसे बयान लेने की कोशिश की जाती थी कि चूँकि तुम अपने ख़लीफ़ा के बॉडीगार्ड रहे हो इस लिए उन्होंने तुम्हें यह काम करने के लिए भेजा है कि इस तरह मुस्लमानों को मारो। राना नईमुद्दीन साहिब इस मुक़द्दमा से रिहाई के बाद 1994 ई में लंदन शिफ़्ट हो गए और यहां भी अपनी उम्र के लिहाज़ से बहुत बढ़ कर अमला हिफ़ाज़त में अपनी डयूटी सरअंजाम देते रहे। और 2010 ई में उनकी बड़ी बेटी की वफ़ात हुई और फिर कुछ दिन बाद उनकी पत्नी की भी वफ़ात हो गई। तो फिर उन्होंने मुझ से पाकिस्तान जाने का पूछा था। हालात ऐसे थे कि बज़ाहिर मुश्किल लगता था लेकिन बहरहाल मैं ने कहा कि जा के शीघ्र वापस आ जाएं और यह कुछ दिन के लिए गए और फिर वापस आ गए।

मरहूम ने पीछे रहने वालों में एक बेटा और चार बेटियां यादगार छोड़ी हैं। उनके बेटे राना वसीम अहमद वाकिफ ज़िन्दगी हैं। प्राईवेट सैक्रेटरी यू के के दफ़्तर में काम कर रहे हैं और चारों बेटियां भी लंदन में ही निवासी हैं। उनके बेटे लिखते हैं कि हमारे पिता ने हमें हमेशा यही शिक्षा दी कि ख़िलाफ़त से चिमटे रहना और सब कुछ ख़िलाफ़त से जुड़ा है। ख़ुद भी ख़िलाफ़त के शैदाई थे और कहते थे मैं डयूटी पर जाता हूँ तो वक्त के ख़लीफ़ा को देखता हूँ तो जवान हो जाता हूँ। मेरी सेहत का राज़ भी यही है कि मैं इस उम्र में भी डयूटी पर आता हूँ वर्ना मैं तो चारपाई से लग जाऊं। वक़्त के बहुत पाबंद थे। हमेशा डयूटी के लिए दो तीन घंटे पहले तैयार रहते थे। अगर मैं कहता कि अब्बू जान अभी तो टाइम बहुत है तो कहते क्या हुआ घर बैठ कर क्या करना है।

एक डाक्टर हशाम हैं उन्होंने भी यह लिखा कि मैं ने उनके काग़ज़ात देखे, इनकी फाईल देखी, पढ़ी तो मैं हैरान रह गया कि इस बीमारी के साथ इस उम्र में तो बंदा घर में बैठ जाता है या केअर होम (care home) मैं चला जाता है लेकिन यह चलते फिरते भी हैं और यही कहा करते थे मेरी सेहत और चलने फिरने का राज़ यही है कि मैं आ जाओं और समय के ख़लीफ़ा के साथ रहूं और उनकी सोहबत में रहूं। उनके बेटे राना साहिब भी लिखते हैं कि अक्सर उनकी मालिश किया करता था। एक दिन मैं उनकी टांगों की मालिश कर रहा था। उनके घुटने के पास आया तो उनकी हल्की सी आवाज़ निकली। मैं ने पूछा क्या हुआ तो कहने लगे कुछ नहीं। बहरहाल वह कहते हैं मैंने ज़रा बार बार पूछा तो कहने लगे कि यह जेल की चोटों का दर्द है। हमेशा सब्र और सहनशीलता का प्रदर्शन किया। और जेल में जब मारा जाता है तो पाकिस्तानी जेलों में बड़े ज़ालिमाना तरीक़े से मारा जाता है। बहरहाल यह सब कुछ उन्होंने बर्दाश्त किया और बाहर आ कर भी उनका सब्र का स्तर बहुत बुलंद था। कभी तबीयत ख़राब होती तो किसी को नहीं बताते थे बल्कि अक्सर यही कहते थे कि अलहमदो लिल्लाह मैं ठीक हूँ।

उनका ख़िलाफ़त की इताअत का स्तर क्या था? कहते हैं एक बार मैं पिता जी के पास बैठा हुआ था और अक्सर मैं उनसे घटनाएं सुनाने के लिए कहता। एक दिन कहने लगे कि जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो जाबा नख़ला गए थे, जहां वह तफ़सीर लिख रहे थे तो मैं उनके साथ था जैसा कि मैं ने पहले बताया कि वह वहां रहे हैं तो किसी बात पर वह मुझ से नाराज़ हो गए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी राना नईमुद्दीन साहिब से ख़फ़ा हो गए और मुझे फ़रमाया कि तुम मस्जिद में चले जाओ और जा कर इस्तिग़फ़ार करो। कहते हैं कि मैं मस्जिद में चला गया। जाबा में छोटी सी कच्ची मस्जिद होती थी। कच्चा सेहन होता था। मस्जिद के सेहन में बैठ कर इस्तिग़फ़ार करने लग गया। इतने में तेज़ आंधी आई और बारिश शुरू हो गई मगर में अपनी जगह पर बैठा इस्तिग़फ़ार करता रहा। जब काफ़ी देर हो गई और मस्जिद का एक साएबान जो लगाया हुआ था वह भी उड़ गया तो हज़ूर रज़ि ने, ख़लीफ़ा सानी रज़ि ने फ़रमाया कि नईम किधर गया है। कुछ लोग मुझे ढूंढते हुए मस्जिद में आए और कहा कि तुम्हें हज़ूर बुला रहे हैं। जब मैं हुज़ूर ख़लीफ़ा सानी रज़ि की सेवा में हाज़िर हुआ तो हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ि ने फ़रमाया कि मुझे पता था कि तुम उधर ही बैठे होगे। जाओ मैंने तुम्हें माफ़ किया। फिर उनके यह बेटे ही उनके हवाले से लिखते हैं कि जब ख़लीफ़ा सानी रज़ि ने तफ़सीर लिखनी शुरू की थी उस वक़्त पिता जी को उनके पास रह कर सेवा का अवसर मिला और अपनी इस ख़िदमत का बड़ा इज़हार किया करते थे, ख़ुशी का इज़हार करते थे और यह उनकी आदत थी कि अपनी ख़ुशी तो हर एक से शेयर करते थे मगर ग़म कभी किसी को नहीं बताते थे।

फिर उनकी ख़ूबियों में लिखते हैं निहायत दयालु बाप थे और सच्चे दोस्त थे। राना वसीम ने जब वक़्फ़ किया है तो कहते हैं मेरा वक़्फ़ स्वीकार हुआ तो मुझे एक दिन कहने लगे कि यह बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। हमेशा तौबा इस्तिग़फ़ार करते हुए अपने वक़्फ़ को निभाना। कभी कोई दुख भी दे तो चुप कर जाना न कि बेहस करना और समस्त बात अल्लाह पर छोड़ देना और सब्र करना और सब्र का दामन कभी हाथ से न छोड़ना। अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ होता है। इस तरह मुझे नसीहत करते थे जैसे कि दोस्त हों। और फिर कहते हैं मेरी पत्नी जो राना साहिब की बहू थीं उनसे भी दोस्तों की तरह पेश आते बल्कि बेटियों से भी बढ़ कर पेश आते। कहते हैं एक घटना उन्होंने मुझे यह भी बताई कि रबवा में पिता जी को हज़रत अम्माँ-जान की दरबानी का भी अवसर मिला। फिर जब उन्होंने ख़ुद वसीयत की तो अपने दूसरे रिश्तेदारों को भी वसीयत की नसीहत करते थे। चंदे की बहुत पाबंदी करते थे। हर महीने की पहली तारीख़ को चंदा अदा करते और इस के बाद बाक़ी ख़र्च करते थे। हमेशा ख़ामोशी से बहुत से लोगों की माली मदद करते थे। कभी किसी से इस का वर्णन नहीं किया करते थे। उनकी बेटियां वर्णन करती हैं कि ख़िलाफ़त से तो अब्बा जान का सम्बन्ध ऐसा था कि रशक आता था। ख़िलाफ़त से मुहब्बत तो उनकी रग रग में थी। हमेशा जब भी समय के ख़लीफ़ा का वर्णन होता तो आँखें नम हो जातीं।

उनकी बेटी ने अफ़्सर के सम्मान की एक घटना लिखी है कि एक बार हम सब बहनें अब्बा जान के साथ मुलाक़ात के लिए प्राईवेट सैक्रेटरी के दफ़्तर में बैठी थीं और इंतिज़ार कर रही थीं कि मुलाक़ात के लिए अंदर जाएं तो अचानक हमने देखा कि अब्बा जान अलर्ट हो के खड़े हो गए हैं जैसे डयूटी पर खड़े होते थे। हम हैरान हुए कि अचानक क्या हो गया है। जब हल्का सा सिर उठा कर देखा तो देखा कि नायब अफ़्सर हिफ़ाज़त जो थे वह दफ़्तर में थे। किसी काम से आए थे या डयूटी करने के लिए आए थे और कहती हैं उनके सम्मान में मेरे पिता खड़े हो गए और जब तक वह वहां रहे वह वहां खड़े रहे और जब वह बाहर चले गए तब अब्बा जान बैठ गए। कहती हैं कि यह कुछ एक मिनट की बात थी लेकिन हमें बहुत कुछ सिखा गई। हमें सारी उम्र यही नसीहत की कि ज़िन्दगी में फ़ायदा लेना है तो ख़िलाफ़त से ऐसे चिमट जाओ जैसे लोहा चुम्बक के साथ चिमटता है। और फिर अब वफ़ात से कुछ दिन पहले ही अपने बच्चों को ईदी भी दे के गए। यह कहती हैं कि अब्बा जान ने हम चारों बहनों, भाई और भाभी को कुछ दिन पहले जब ईदी दी तो हम ने कहा कि अब्बा जान अभी तो रमज़ान भी शुरू नहीं हुआ। कहने लगे कि वक़्त का पता नहीं होता अपने फ़र्ज़ पूरे करने में देर नहीं करनी चाहिए।

उनकी बहू बयान करती हैं कि मेरा बहुत ख़्याल करते थे। हमेशा बाप बन के मुझे नसीहत करते थे। जब उनकी बहू के पिता की वफ़ात हो गई तो फ़ौरन अपने बेटे को कहा कि तुम दोनों मियां बीवी पाकिस्तान जाओ और वहां उनके जनाज़ा में शामिल हो। फिर यह बहू लिखती हैं कि जब भी रात के किसी पहर में मेरी आँख खुलती तो मैं ने हमेशा उनको नमाज़ पढ़ते ही देखा। ख़िलाफ़त से बे-इंतिहा इशक़ था। हर एक लिखने वाले ने लगभग यही लिखा है कि ख़िलाफ़त से वफ़ा का बहुत सम्बन्ध था और कहा करते थे कि ख़िलाफ़त की दुआओं की बदौलत ही जेल में रहा हूँ और ख़िलाफ़त की दुआओं से ही यहां हूँ। और कहते थे कि जिस देश के सदर ने मौत के काग़ज़ पर दस्तख़त किए थे ख़िलाफ़त की दुआओं की वजह से इस का तो पता नहीं चला कि कहां गया और राना साहिब ज़िन्दा निशान बन कर दुनिया के सामने आ गए।

उनकी एक बेटी आबिदा हैं वह कहती हैं कि हमारे बच्चों को एक नसीहत हमेशा करते थे कि ख़ुदा से और ख़िलाफ़त से हमेशा मज़बूत सम्बन्ध रखो और कहते थे इसी में तुम्हारी बक़ा है। हमेशा क़ुरआन मजीद पढ़ने की नसीहत करते रहते। नमाज़ और तहज्जुद के पाबंद थे। कहती हैं मैंने कभी अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखा कि उन्होंने कभी तहज्जुद छोड़ी हो। हमारे लिए वह दुआओं का ख़ज़ाना थे। बहुत ज़्यादा मेहमान नवाज़ थे। ग़रीब रिश्तेदारों का ख़्याल रखते थे। राना साहिब अपने पिता और माता का और फिर अपनी पत्नी मरहूमा का भी वफ़ात के बाद चंदा बाक़ायदगी से अदा किया करते थे। कहती हैं एक शेअर मैंने उन को हमेशा ऊंची आवाज़ में पढ़ते देखा और सुना है कि

हो फ़ज़ल तेरा या रब या कोई इब्तिला हो
राज़ी हैं हम इसी में जिसमें तरी रज़ा हो

उनकी बेटी कहती हैं कि अम्मी जान की वफ़ात के बाद हम सब बहनों का बहुत ज़्यादा ख़्याल रखा और अपनी बहू के साथ भी बेटियों से बढ़ के सुलूक किया। जो भी चीज़ लाते या जब ईदी इत्यादि देनी होती तो पहले बहू को देते और फिर हम सब को देते और हमेशा कहते कि किसी की बेटी को घर लाए हैं इस का ज़्यादा ख़्याल रखना है। मैंने ख़ुदा को जवाब देना है

एक बेटी लिखती हैं कि वास्तव में उन्होंने आज़माईश के वे दिन जो जेल में गुज़ारे उस की रज़ा पर और दीन की मुहब्बत और ख़िलाफ़त की मुहब्बत में गुज़ारे। कभी उनके मुँह से शिकवा तो दूर उफ़ तक नहीं सुना। कहती हैं कभी नमाज़ और तहज्जुद में देरी नहीं की न कभी बीमारी में नाग़ा किया। जेल में तशद्दुद की वजह से गुर्दे की तकलीफ़ हो गई जो आख़िरी ज़िन्दगी में आकर ज़ोर पकड़ गई थी। सांस की तकलीफ़ या कोई और तकलीफ़ भी साथ थी कहती हैं इस में भी कभी हमने उनसे ऐसे शब्द नहीं देखे कि जो बेचैनी वाले हों। हमेशा शुक्र अलहमदो लिल्लाह के इलावा उनके मुँह से कोई वाक्य न सुना।

फिर एक कहती हैं कि हमारे लिए यहां तक सोचा था कि कहते थे मेरी बड़ी उम्र हो गई है 87, 88 साल उम्र हो गई वक़्त का पता नहीं है। जब मैं न रहूं या फ़ौत हो जाऊं तो मुझे पाकिस्तान लेकर जाना और बेटियों को फ़िर यह भी साथ कहा कि मैं ने आप सब के लिए टिकट के पैसे रखे हुए हैं ताकि जब मेरा जनाज़ा ले कर जाओ तो अपने पतियों की तरफ़ न देखो। अपने बाप के खर्चे पर उस के जनाज़ा के साथ जाओ। अभी तो हालात की वजह से जनाज़ा जा नहीं सकता। अमानतन तदफ़ीन की गई है अगर कोई रास्ता निकला तो उनकी इच्छा के अनुसार इंशा अल्लाह जनाज़ा भिजवाने की कोशिश की जाएगी।

उनके भांजे राना शब्बीर हैं जो रब्वह में ताहिर हार्ट में हैं। कहते हैं कि उनको क़ैद के दौरान राना साहिब से कई बार मुलाक़ात का अवसर मिला और जब भी उनको जेल में सामान पहुंचाने गए तो हमें परेशानी होती थी और वह अक्सर हमें सब्र और दुआ की नसीहत करते थे और बड़े उच्च स्तर के बुज़ुर्ग थे और बड़े सब्र करने वाले इन्सान थे। इसी तरह उनकी भतीजी हैं वह लिखती हैं कि 1980 ई तक क़सरे ख़िलाफत में रहते थे और जलसा पर जब हम जाते थे और कई बार एक दो ग़ैर अहमदी फ़ैमलीयाँ भी साथ होती थीं। जलसा पर अज़ीज़ दोस्त चले जाते थे तो हमारे फूफा जान हमेशा (यह उनकी बीवी की भतीजी रूबीना साहिबा हैं) अपनी पत्नी को कहा करते थे कि मेहमानों का हमेशा ख़्याल रखना है और खाने में और सोने में कोई तकलीफ़ न हो। अगर जगह कम होती तो ख़ुद बच्चों को लेकर स्टोर या किचन में सो जाते और मेहमानों को कमरा या बरामदा में अच्छी जगह पर सुलाते। और कहते यह मसीह मौऊद के मेहमान हैं उनको तकलीफ़ नहीं होनी चाहिए। उनके एक भांजे कहते हैं कि मैं उन्हें जेल में मिलने गया और जब उनसे ख़ैरीयत पूछी और घटना के बारे में जानना चाहा तो बड़े जोशीले अंदाज़ में फ़रमाया बेटा हर हाल में कलिमा की हिफ़ाज़त करनी है। अगर आपकी जान भी चली जाए तो कोई पर्वा नहीं। यह भांजे कहते हैं कि मुझे यूं महसूस हुआ कि यह अलफ़ाज़ किसी इन्सान के नहीं बल्कि किसी फ़रिश्ता की आवाज़ है। बड़े दिलेर, बहादुर और कलिमे की हिफ़ाज़त करने वाले, ख़िलाफ़त से इशक़ करने वाले निडर अहमदी थे।

फिर यह कहते हैं कि जब मैं बेल्जियम से लंदन शिफ़्ट हुआ तो कहते हैं कि जब यहां आए हो तो फिर ख़िलाफ़त के साथ चिमट जाना। अगर यहां ख़िलाफ़त की वजह से आए हो और समय के ख़लीफ़ा की हर बात पर लब्बैक नहीं कहना तो कोई लाभ नहीं। और फिर यह भी कहा कि बाक़ायदगी से नमाज़ें अदा करो और किसी भी मसला पर घबराने की बजाय हमेशा अल्लाह तआला की तरफ़ झुकू। झूठे और मुनाफ़िक़ से सख़्त बेज़ार थे। अपनी डयूटी के बारे में बहुत फ़िक्र में रहते। कभी तबीयत ज़्यादा ख़राब होती और घर वाले कहते कि आज आराम कर लें तो कहते नहीं मैं ठीक हूँ। यह तो बोनस (bonus) के दिन हैं। बुढ़ापे में मुझे ख़िदमत का अवसर मिल रहा है तो मुझे मिलने दो।

इलयास मुनीर साहिब जो जेल में राना साहिब के साथी थे वह लिखते हैं कि राना साहिब के साथ मेरी ज़िन्दगी का एक हिस्सा गुज़रा है और इस आख़िरी विदा के वक़्त उनको देख भी नहीं सकता तो दिल सख़्त परेशान है। राना साहिब मरहूम के साथ दस साल का अरसा क़ैद में गुज़रा। एक दिन भी मैंने उन्हें हौसला हारते हुए नहीं देखा यहां तक कि जब फ़ौजी डिक्टेटर की तरफ़ से आपको मौत की सज़ा का ज़ालिमाना और वहशियाना हुक्म सुनाया गया तो भी उसे खुशी से सुना और क़बूल किया। खानदान बड़ा था और सभी बच्चे छोटी उम्रों के थे। खाने पीने का कोई साधन कोई ख़ास ना था मगर भरोसा था। धर्म की सेवा की भावना थी और जमाअत की इज़्ज़त का फ़िक्र था और बस। जब कभी परेशान होते तो यही कहते कि उनके इरादे बहुत ख़तरनाक हैं। अल्लाह तआला ही है जो उनसे महफ़ूज़ रखेगा। फिर अल्लाह तआला ने भी आपके काम सँवारे। बच्चियों की शादियां भी कैद के दौरान में ही हो गईं।

इलयास मुनीर साहिब घटना का कुछ संक्षिप्त वर्णन करते हुए लिखते हैं कि जब हंगामा करने वालों ने मस्जिद पर हमला कर दिया और कलिमा तय्यबा और आयात तथा हदीसों का अपमान शुरू कर दिया। कहते हैं इस अवसर का वह मन्ज़र मुझे नहीं भूलता जब आपको पहली बार निहायत कड़कदार आवाज़ में ललकारते हुए सुना था। राना साहिब ने कहा कि तुम कलिमा मिटाने वाले कौन होते हो? कौन हो तुम कलिमा वाले !और कहते हैं कि इस से पहले मैं ने कभी उनको उर्दू बोलते हुए नहीं सुना था लेकिन इस वक़्त उर्दू में बोले और बड़ी कड़कदार आवाज़ में बोले और अकेले ही तीस चालीस आदमियों को, हमला आवरों को पहले मस्जिद के कोनों में छिपने और फिर दौड़ने पर मजबूर कर दिया। फिर लिखते हैं कि आपने न सिर्फ यह कार्रवाई बहुत बहादुरी से की बल्कि जब पुलिस अफ़्सर ने पूछा कि यह फायरिंग किस ने की थी तो एक लम्हा भी देरी न की और शीघ्र आगे बढ़कर कहा कि मैंने की है। इस के बाद आप पर विभिन्न अंदाज़ से तशद्दुद किया गया और मजबूर करने की कोशिश की गई कि जमाअत के ओहदेदारों का नाम लें कि उनके कहने पर उन्होंने यह कार्रवाई की है मगर आफ़रीन है इस शेर दिल पर जिसने निज़ाम जमाअत पर ज़र्रा बराबर भी आँच नहीं आने दी। और हक़ीक़त भी यही थी। ओहदेदारों को यह इलम तक न था कि उनके पास अपनी व्यक्तिगत बंदूक़ भी है। फिर अदालत और वह भी विशेष फ़ौजी अदालत, उस के सामने भी किसी किस्म के दबाओ में नहीं आए। ज़बानी और तहरीरी तौर पर साफ़ ज़मीर के साथ, साहस और बहादुरी के साथ यह स्वीकार किया कि फायरिंग उन्होंने ही की थी और आपकी यही बहादुरी और शुजाअत और साफ़ कहना और सिलसिले के सम्मान तथा इज़्ज़त की भावना थी कि अल्लाह तआला ने अन्त में आपको सफल किया और आख़िर दम तक फिर उनको ख़िलाफ़त के साथ सेवा की तौफ़ीक़ भी मिली।

फिर इलयास मुनीर साहिब ही लिखते हैं कि क़ैद के दौरान जब उनके पिता साहिब को ख़लीफ़ा राबे के ख़त आते, और उनके पिता क़ैद के दौरान हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे के ख़ुत्बे लिखे हुए हमारे लिए लाते, उस वक़्त एम टी ए का रिवाज, बाक़ायदा प्रबन्ध तो शुरू नहीं हुआ था, ख़ुत्बे लिखे हुए आते थे, तो कहते हैं राना साहिब मुझे अपने साथ बिठा लेते थे कि ख़ुत्बा सुनाओ और जितना समय हम सज़ा मौत की कोठड़ियों में रहे अलग अलग होते थे। इस दौरान जब कुछ देर के लिए दोनों को इकट्ठे करने के लिए खोला जाता तो वे इकट्ठे होने का जो समय था वह केवल ख़ुत्बा सुनने के लिए वक़्फ़ कर देते और बड़े सम्मान से सुनते।

फिर कहते हैं कि जो नमाज़ बाजमाअत हो सकती थी उस के लिए बाक़ायदा प्रबन्ध करते बल्कि कई बार जेल में मौजूद कुछ अन्य अहमदियों को भी बुला लेते। रमज़ान का जहां तक सम्बन्ध है तो कहते हैं कि हमें मई जून और जुलाई के सख़्त रोज़े जेल में आए और आदरणीय राना साहिब अपनी बड़ी उम्र और जेल की कठिनाइयों के बावजूद समस्त रोज़े रखते रहे। कहते हैं कि उन्होंने बड़ा ग़ैरमामूली हिम्मत और हौसला दिखाया और पूरी प्रसन्नता के साथ हर अवस्था का मुक़ाबला किया और जब उनको सज़ा मौत का हुक्म भी सुनाया गया तो उस वक़्त भी बड़ी हिम्मत से उन्होंने वक़्त गुज़ारा और उनकी जुर्रत की यह जो अवस्था थी ग़ैरों ने भी महसूस की। कहते हैं सज़ा मौत का हुक्म मिलने के बाद जिस पर सदर ने भी दस्तख़त कर दिए थे, राना नईमुद्दीन साहिब के पास जेल का एक वार्डन आया और कहने लगा कि बुज़ुर्गो! देखो यह मिज़ाी अजीब हैं। उनको सज़ा मौत की तारीख़ मिल गई है और अपने अंजाम की आख़िरी मंज़िल पर पहुंच गए हैं मगर उनके चेहरों पर कोई असर नहीं हुआ और कोई फ़र्क़ नहीं आया। ज़रा भी कुमलाए नहीं और बहरहाल लंबी बातें करता रहा। राना साहिब कहते हैं कि मैं समझ गया कि उसे मेरा पता नहीं कि मैं कौन हूँ। अत: जब उसने अपनी बात मुकम्मल कर

ली तो राना साहिब ने इस से पूछा कि मेरे चेहरे पर तुम ने कोई असर देखा है। उसने जवाब दिया कि नहीं। इस पर राना साहिब के इस इन्किशाफ़ ने उसे हिला कर रख दिया कि मैं भी अहमदी हूँ और इन्ही में से हूँ।

आख़िर में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल राबे का एक ख़त भी पढ़ता हूँ जो राना नईमुद्दीन साहिब को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल राबे रहमहुल्लाह ने सितम्बर 1986 ई में लिखा था। इस का कुछ हिस्सा यह है कि "आपके ख़ुलूस भरे पत्र मिले। उच्च ईमान की जिस मज़बूत चट्टान पर आप खड़े हैं वह गर्व योग्य है। अल्लाह वालों को उच्च स्थान के हासिल करने से पहले इस किस्म की कठिन राहों से गुज़रना ही पड़ता है। आप लोगों की सआदत पर रशक आता है। दरख़्त अपने फल से जाना जाता है। आप लोग ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दरख़्त की हरी शाख़ें और मीठे फल हैं। अल्लाह तआला नष्ट नहीं करेगा। जमाअत दुआएं कर रही है मेरी दुआएं भी आपके लिए हैं। उम्मीद है आपने मेरी ताज़ा नज़्म भी सुन ली होगी। इस में आप और आप जैसे मुख़लसीन के लिए ही चाहतों का पैग़ाम और सलाम है। अल्लाह तआला अपने फ़रिश्तों से मदद करे और दुश्मन के पंजे से नजात बख़्शे। अल्लाह आपके साथ हो।" यह ख़त ख़लीफ़ा राबा ने राना साहिब को लिखा था

मुबारक सिद्दीक़ी साहिब बयान करते हैं कि एक बार मैंने उनसे उनकी क़ैद के दिनों की बात की और जेल में मुश्किलों का वर्णन किया तो मुस्कुरा कर कहने लगे कि हम अहमदियों की ज़िन्दगी अल्लाह तआला के लिए, रसूल के लिए और समय के ख़लीफ़ा की इताअत के लिए वक़्फ़ है। इसलिए मुझे कभी कोई मुश्किल मुश्किल नहीं लगती। मैं हर हाल में अल्लाह की रज़ा पर राज़ी रहने वाला हूँ। यक़ीनन वह हर हाल में आख़िर दम तक अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी रहे। मैंने भी जब भी उनका हाल पूछा तो अलहमदो लिल्लाह ही कहते रहे। हस्पताल से आते थे तो अगले दिन पहुंच जाते थे और कहते थे बिलकुल ठीक हूँ। बल्कि साथ ही मुझे भी दुआएं दिया करते थे।

जैसा कि मैं ने कहा एक डाक्टर ने कहा कि इस किस्म की बीमारियों के जो लोग हैं जिनकी टांगें भी सूजी हुई हूँ वे तो घर से बाहर नहीं निकल सकते तो यह डयूटी पे आ के खड़े हो जाते हैं और इस बात पर उनको, डाक्टर को हैरानी थी। डाक्टर तो हैरान होते होंगे लेकिन उनको क्या पिता कि उनमें एक भावना थी। ख़िलाफ़त से प्यार था। इस के क़रीब रहने की तड़प थी जो उनको मस्जिद में खींच लाती थी, डयूटी पर ले आती थी। मैंने उनके चेहरे पर हमेशा बड़ी सन्तोष देखा और ख़िलाफ़त के लिए मुहब्बत देखी है। अल्लाह तआला उनसे अगले जहान में भी प्यार और मुहब्बत का सुलूक फ़रमाए और अपने प्यारों के क़दमों में स्थान दे।

मैं उन्हें बचपन से जानता हूँ जैसा कि वर्णन हुआ, जब उस वक़्त वह जाबा, नख़ला में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी के साथ जाया करते थे तो हम भी कुछ दिनों के लिए गर्मीयों में वहां जाया करते थे। तो उस वक़्त भी हम से इनका बड़ी शफ़क़त का सुलूक होता था और ख़िलाफ़त के बाद तो मेरे साथ उस का रंग ही और था। जैसा कि ख़िलाफ़त से वफ़ा की घटनाओं और एहसासात, भावनाएं हम ने सुन लिए हैं वे हर वक़त नज़र आते थे। अल्लाह तआला उनके बच्चों को भी हमेशा वफ़ा के साथ अपने बाप के नक़्श क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। हालात की वजह से उनका जनाज़ा तो मैं नहीं पढ़ सका कुछ हुकूमती पाबंदियां भी थीं और restrictions थीं,उस का अफ़सोस भी है। इंशा अल्लाह तआला किसी वक़्त उनका जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ा दूँगा।

आख़िर पर मैं दुबारा आजकल की महामारी के हवाले से यह भी कहना चाहता हूँ कि अपने कुछ अहमदी मरीज़ हैं उनके लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला सबको पूर्ण शफ़ा प्रदान फ़रमाए और हमें भी अपनी रज़ा की राहों पर चलने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। सही रंग में हमें इबादत का और हुक़ूक़ुल ईबाद का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और शीघ्र यह बला हम से दूर फ़रमाए। दुनिया को भी समझ और अक़ल दे। वह भी एक ख़ुदा को पहचानने वाले बनें। ख़ुदा तआला की इबादत करने वाले बनें। तौहीद को जानने वाले बनें। अल्लाह तआला सब पर रहम फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 8 मई 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

न था। इस वक़्त भी हॉलैंड में कुछ नेक फ़ितरत वजूद ऐसे थे जिन्हों ने इस्लाम के नूर को पहचाना और अल्लाह के फ़ज़ल से अहमदियत स्वीकार करने की पाई।

इस के बाद प्रिया अदीला रिहान ने पहली अहमदी डच औरत आदरणीया शार्लट वलबरी बड साहिबा का ज़िक्र करते हुए बताया इन बरकतों वाले वजूदों में सबसे पहले आदरणीया शार्लट वलबरी साहिबा का नाम आता है। वह क़ुरआन करीम के अध्ययन के द्वारा इस्लाम से परिचित हुईं फिर उन्होंने अमरीका में हमारे मिशन से सम्पर्क किया और किताबें मंगवा कर पढ़ीं। इस दौरान हज़रत चौधरी मुहम्मद ज़फ़र उल्लाह ख़ान साहिब लंदन से हॉलैंड सैर के उद्देश्य से पहुंचे और मिस बड से मिलकर उन्हें तब्लीग़ की।

अत: उन्होंने 1924 ई में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि की बैअत लिख कर की। बाद में इन को कादियान जाने और लज्ना इमाउल्लाह में शामिल होने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ, इस दृष्टि से वह हॉलैंड की पहली डच लज्ना मैंबर हैं

मिस बड का इस्लामी नाम हज़रत ख़लीफतुल मसीह अस्सानी रज़ी अल्लाह अन्हो ने "हिदायत" परामर्श फ़रमाया तो महोदया ने लिखा हज़रत अक़दस ने मुझे जो नाम दिया है इस से मुझे बहुत ख़ुशी हुई। मेरे वलनदीज़ी कानों में यह बहुत अच्छा मालूम होता है और इस नाम (हिदायत) के अर्थ विशेषत: मेरे लिए हमेशा बड़ी मदद साबित होंगे

आदरणीया हिन्दउस्तान आईं। इस अवसर पर कई अख़बारों ने उनके आने और इस्लाम स्वीकार करने की 1929 ई में ख़बरें प्रकाशित कीं। कादियान पहुंचने पर महोदया का शानदार स्वागत किया गया।

(अख़बार फ़ारूक़21-28 मई 1929 ई , पृष्ठ 17-18)

23 मई 1929 ई को लज्ना इमाउल्लाह कादियान ने मिस हिदायत बड के सम्मान में एक स्वागत प्रोग्राम किया और अंग्रेज़ी भाषा में सम्बोधन पेश किया और इस बात पर ख़ुशी का इज़्हार किया गया कि आप हॉलैंड में हज़रत मसीह मौऊद पर ईमान लाने वालों में से सबसे प्रथम हैं और हॉलैंड वालों में पहली औरत हैं जो हज़ारों मील का सफ़र कर के मर्कज़ में आईं। सम्बोधन में उनकी इस्तिक़ामत की दुआ की गई जिसके जवाब में उन्होंने अंग्रेज़ी में तक़रीर की।

इस के बाद प्रिया बुश्रा ज़ुबैर ने दूसरी अहमदी डच औरत आदरणीया रज़ीया डीन बोर साहिबा के बारे में बताया: दूसरी डच अहमदी औरत आदरणीया रज़ीया डीन बोर साहिबा हैं। हेग में मिशन के निवास के बाद सबसे पहले उन्होंने अहमदियत स्वीकार की

आदरणीय हाफ़िज़ क़ुदरतुल्लाह साहिब के बतौर मुबल्लिग़ इस्लाम हॉलैंड आने पर प्रैस में जो ख़बरें प्रकाशित हुईं उनको पढ़ते ही उन्होंने हाफ़िज़ साहिब से सम्पर्क किया। रज़िया साहिबा को ख़्वाब में हरी रोशनी में इस्लाम लिखा हुआ नज़र आता था और उनकी इच्छा थी कि कोई मुसलमान मिले तो उस के द्वारा वह इस्लाम धारण करें। यह हेग से बहुत दूर रहती थीं। उन्होंने बड़ा लंबा सफ़र कर के हाफ़िज़ साहिब से मुलाक़ात का। उन्होंने आदरणीया को लिट्रेचर दिया और उन्होंने चालीस दिन के अंदर आकर बैअत कर ली।

उनकी बैअत के बारे में हाफ़िज़ क़ुदरतुल्लाह साहिब फ़रमाते हैं: हॉलैंड की दुनिया मेरे लिए बिलकुल नई थी। न भाषा से परिचय थी और न किसी और के साथ वहां का परिचय था। आरम्भिक काम तो हालात का जायज़ा लेना होता है और फिर उस के साथ भाषा का सीखना और फिर तब्लीग़ी मैदान की तलाश इत्यादि। मगर तब्लीग़ी जोश के नतीजा में इन दिनों मेरे दिल में इच्छा पैदा हुई कि काश ख़ुदा तआला चालीस दिन के अन्दर-अन्दर मुझे यहां इस्लाम पर फ़िदा होने वाली कोई रूह प्रदान फ़र्मा दे तो क्या ही अच्छा हो। अत: मैंने उस के लिए विशेष रूप से

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

दुआ भी की।

हाफ़िज़ साहिब वर्णन करते हैं कि बैअत के कुछ दिन के बाद ही वह एक हज़ार गल्डर लेकर हाज़िर हुईं और इस्लाम की सेवा के लिए पेश कर दिए। मैंने उसकी माली हालत की वजह से समझाना चाहा कि इतनी बड़ी क़ुर्बानी उस के लिए मुश्किल होगी लेकिन उसने बार बार कहा कि यह रक़म स्वीकार की जाए क्योंकि वह एक लंबा समय इस्लाम की रोशनी से दूर रही है और जब उसने उस को पा लिया है इस के लिए वह अपना सब कुछ पेश करना चाहती है

इस के बाद प्रिया तय्यबा सादिया ने तीसरी अहमदी डच औरत आदरणीया नासिरा ज़मर मैन साहिबा का ज़िक्र करते हुए कहा 1945 ई में क़ुरआन मजीद का डच अनुवाद लंदन में मौलाना जलालुद्दीन शमस साहिब की निगरानी में कराया गया था। यह काम आदरणीया नासिरा ज़मर मैन साहिबा ने किया था।

इस्लाम अहमदियत की तरफ़ उनका सफ़र ऐसे शुरू हुआ कि लंदन में एक ट्रांसलेशन ब्यूरो ने उनसे सम्पर्क किया और उनको क़ुरआन पाक के आख़िरी तीन सौ पृष्ठ डच में अनुवाद करने के लिए दिए। उनके दिल में इच्छा पैदा हुई कि पहले हिस्सा का अनुवाद भी देखना चाहिए। वह देखा तो बहुत क़दीम और मुश्किल डच में अनुवाद किया गया था और क़ुरआन की शिक्षाएं उनके अपने ईसाई अक़दों के ख़िलाफ़ थीं। उन्होंने यह काम लेने से इनकार कर दिया। आख़िर बहुत सोच विचार के बाद उन्होंने इस मुबारक काम को करने का फ़ैसला किया और अनुवाद का सारा काम ही अपने ज़िम्मा ले लिया। जब उन्होंने 30-40 पृष्ठों का अनुवाद कर लिया तो अपना काम दिखाने डायरेक्टर के पास गईं तो उसने और इस के दफ़्तर के कुछ लोगों ने क़ुरआन के लिए निहायत तौहीन वाले वाक्य प्रयोग किए और बाद में जब वह वहां जातीं, वह क़ुरआन मजीद का अपमान करते रहते। एक-बार वह गईं तो डायरेक्टर को सख़्त पीड़ादायक हालत में पाया, उस की तबीयत बहुत ख़राब थी, अगले दिन ही वह फ़ौत हो गया। इसी तरह इस दफ़्तर में से जिस जिस आदमी ने क़ुरआन का अपमान किया थी वह मुख़्तसर समय में फ़ौत हो गए जो इस गुफ़्तगु में शामिल नहीं हुए थे वे सलामत रहे। इन घटनाओं का उनके दिल पर गहरा प्रभाव हुआ और क़ुरआन करीम की सच्चाई और हक़्क़ानियत का सिक्का बैठना शुरू हुआ और इस किताब की महानता का उनके दिल पर प्रभाव हुआ। धीरे-धीरे उन्होंने मस्जिद फ़ज़ल लंदन जाना शुरू किया और अहमदियत का अध्ययन करना शुरू किया।

कुछ समय बाद आप अपने देश हॉलैंड वापस आ गईं। यहां हॉलैंड में मिशन की स्थापना के बाद अल्लाह तआला के फ़ज़ल और इस वक़्त के मुबल्लग़ीन की मुख़लिसाना कोशिशों से आपको अहमदियत की नेअमत प्राप्त हुई।

इस के बाद प्रिया नाइला तारिक़ ने चौथी अहमदी डच औरत आदरणीया प्रिया वाल्टर साहिबा का परिचय करवाते हुए कहा हॉलैंड की तारीख़ में एक इंतिहाई नेक और मुख़लिस औरत आदरणीया प्रिया वाल्टर साहिबा थीं। बहुत दुआ करने वाली और रोया तथा कश्फ देखने वाली थीं। हज़रत सर ज़फ़र उल्लाह ख़ानसाहब भी यहां रहने के दौरान अपने कामों के लिए उनको दुआओं का कहा करते थे। नमाज़ों की बेहद पाबंद थीं और मस्जिद से बहुत लगाओ था। बसों पर लंबा सफ़र कर के बाक़ायदगी से मस्जिद आया करती थीं। उन्होंने क़ुरआन करीम सीखने के लिए अरबी सीखी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें और जमाअत के लिट्रेचर का बहुत अधिक अनुवाद किया।

आदरणीया प्रिया वाल्टर साहिबा को पेंटिंग और फ़न ख़त्ताती का बहुत शौक़ था और अल्लाह और क़ुरआन करीम से अपनी मुहब्बत का इज़हार भी वह इनके द्वारा करती थीं। मस्जिद के महिराब के लिए उन्होंने केलीगराफ़ी की थी। 1985 ई मैं आग की वजह से बेशतर तबाह हो गई थी। इस अवसर पर आदरणीया प्रिया वाल्टर साहिबा की मस्जिद मुबारक के लिए बनाई गई केली गराफ़ी का एक नमूना और मस्जिद मुबारक की पेंटिंग की तस्वीर दिखाई गई।

इस के बाद प्रिया मर्यम नईम ने पांचवें अहमदी डच औरत आदरणीया बहरी हमीद साहिबा का ज़िक्र करते हुए बताया: आदरणीया बहरी हमीद साहिबा एक इंतिहाई मुख़लिस डच अहमदी औरत हैं जो आजकल अमरीका में रहती हैं।1957 ई में फ़ौज में अपनी नौकरी के दौरान उन्होंने सैर के लिए मिडल ईस्ट का सफ़र किया तो उनका परिचय इस्लाम से हुआ। हॉलैंड वापसी पर उनका सम्पर्क हमारी मस्जिद से हुआ। वहां उनको पवित्र क़ुरआन दिया गया जिसको पढ़ कर हज़रत ईसा के मुक़ाम और गुनाहों के कफ़्फ़ारा के बारे में उनकी शंकाएं दूर हुईं। यह मस्जिद में बाक़ायदगी से आने लगीं और वहां आने वाले ग़ैर अज़ जमाअत मुसलमानों से उनकी विभिन्न विषयों पर बातचीत होती थी लेकिन उनको सिर्फ आदरणीय हाफ़िज़ क़ुदरत उल्लाह साहिब की दलीलें क़ुरआन मजीद की शिक्षाओं के ठीक अनुसार नज़र आती थी। उन्होंने 1962 ई में बैअत की।

आदरणीया बहरी हमीद साहिबा इंतिहाई मुख़लिस और मेहनती औरत हैं। माली क़ुर्बानी और तब्लीग़ी कामों में हमेशा सब से आगे रहीं। यहां विभिन्न लाइब्रेरीज़ में तब्लीग़ी लैक्चरज़ और क़ुरआन करीम की नुमाइशें करवाती रही हैं। लज्ना इमाउल्लाह हॉलैंड की नैशनल सदर भी रही हैं। ननस्पीत में बैयतुन्नूर को प्राप्त करने में की जाने वाली कोशिशों में उनका बहुत बड़ा हाथ है। अल्लाह तआला उनकी उम्र और सेहत में बरकत प्रदान फरमाए आमीन।

इस के बाद वाकिफ़ात नौ के एक ग्रुप प्रिया नाजिया असलम, आसिफ़ा मलिक, दुर्रे अदन, हिबतुल बसीर, काशफ़तुन्नूर, आलीया नत्थू और प्रिया दानिया अहमद ने मिलकर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अरबी क़सीदा पेश किया

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर फ़रमाया कि क्या कोई डच औरत अहमदी हुई है पिछले10 साल में ?इस पर एक लज्ना ने निवेदन किया कि एक लज्ना हैं जो काफ़ी active भी हैं और तब्लीग़ भी करती हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यहां कितनी वाक़फ़ात नौ बैठी हुई हैं? हर एक वाकिफ़ा नौ यह अह्द करे और तब्लीग़ का शौक़ पैदा करे कि उसने एक डच औरत को अहमदी बनाना है।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर लज्ना ने बताया कि इस वक़्त यहां 83 लज्ना मौजूद हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि पहले 83 तो बनाओ। अगर किसी को अहमदी भी नहीं बनाना तो आपके वाक़फ़ात नौ होने का क्या लाभ

एक लज्ना ने सवाल किया हम कहते हैं कि इन्सान की फ़ितरत नेक होती है तो अगर इन्सान की फ़ितरत नेक है तो हमें बुरी चीज़ें attract क्यों करती हैं और हमें उनकी आदत इतनी जल्दी क्यों हो जाती है

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इन्सान की फ़ितरत तो नेक है। बच्चा की फ़ितरत नेक होती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया

हर तरफ़ आवाज़ देना है हमारा काम आज
जिसकी फ़ितरत नेक है वह आएगा अंजामकार

इसका अर्थ है कि सारों की फ़ितरत नेक तो नहीं होगी, जिसकी फ़ितरत नेक होगी वो अच्छाइयों की तरफ़ आएगा। और इस ज़माना की अच्छाई हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम के साथ जुड़ी है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर बच्चा नेक फ़ितरत के साथ पैदा होता है। इसके बाद जो उसका माहौल है,environment है, माँ बाप हैं , इस को प्रभावित करते हैं। कोई मजूसी बन जाता है, कोई ईसाई बन जाता है, कोई यहूदी बन जाता है कोई मुसलमान बन जाता है और मुसलमान बन कर अगर आज के मौलवी की तरह बन गया तो

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

फिर फ़ितरत नेक कहाँ होगी, वह तो ज़हर से भी अधिक ज़हरीला है। तो इसलिए बच्चा नेक फ़ितरत होता है। हर इन्सान नेक फ़ितरत नहीं होता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हदीस यह है कि बच्चा नेक फ़ितरत होता है। हाँ उस का environment इस को ख़राब कर देता है। अब यह जो औरत थीं जो गल्डर लेकर आई थीं। उन्होंने 1000 गल्डर (guilder) की बात की। उन्होंने भी यही कहा कि सारी ज़िन्दगी मैंने ग़लतियों और गुनाहों में गुज़ारी और अब मेरे अंदर का असल इन्सान जागा है और मुझे मज़हब की शिक्षा का पता लगा है । उन्होंने बावजूद इसके कि विभिन्न वक़्तों में की हुई savings थीं , वह सारे गल्डर लेकर आ गईं। अब देखें वह जो नेक फ़ितरत लेकर पैदा हुआ था इस को माहौल ने ख़राब कर दिया था ,अब दोबारा उसकी फ़ितरत नेक हो गई। और जिनकी फ़ितरत ठीक हो जाएगी वह अन्त में आएँगे। जिनकी नहीं होगी वे नहीं आएँगे।

एक लज्ना ने सवाल किया कि हुज़ूर Swimming के दौरान या sports करते हुए या lab मैं कई बार बुर्क़ा नहीं पहन सकते इस अवस्था में हमें क्या करना चाहिए? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: वहां का जो code है उसकी पाबंदी करनी है और जो swimming है वह कोई compulsory तो नहीं है। लेकिन अगर लाज़िमी हो तो आजकल जो औरतों का पूरा ड्रैस निकला हुआ है वह पहन कर एक कोने में जा कर swimming कर सकती हैं। अगर नहीं है तो उनसे कहो कि हमें ऐसा वक़्त दें जिस वक़्त सिर्फ़ औरतें swimming कर रही हूँ । अगर फिर भी मसला है तो उनसे कहो कि मैं एक हिस्सा में चली जाऊँगी ,इतनी पाबंदी मैं मान लेती हूँ कि मैं अलग हो कर और dress पहन कर करूँगी। उनका जो dress होता है वह नहीं पहनना।

एक लज्ना ने सवाल किया कि जो बाहर से यूरोप में आते हैं उन्हें सोशल मिलती है और सोशल मिलने के साथ black में भी काम करते हैं। जो वो इन्कम लेते हैं क्या वह रिज़्क़ हलाल में शामिल होती है? और क्या वह इस पर जमाअत को चन्दा दे सकते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जो क़ानून के ख़िलाफ़ करते हैं वह रिज़्क हलाल किस तरह हो सकता है? वे धोखा देते हैं। वे ऐसा काम करते हैं कि पता भी न लगे और फिर tax भी नहीं देते। सिर्फ एक जुर्म नहीं कर रहे होते, वे दोहरा जुर्म करते हैं। सोशल भी लेते हैं और काम भी करते हैं। फिर काम करने के बाद उसे छुपाते हैं और गर्वनमैंट को जो tax देना चाहिए वे भी नहीं देते। तो फिर ऐसे लोगों से चन्दा क्यों लिया जाए ? नहीं लेना चाहिए। या तो उनसे कहें कि तुम लोग जो सोशल लेते हो कि तुम्हारी इन्कम नहीं है और फिर जितना तुम कमाते हो उतना तुम tax दो और बाक़ी सोशल वालों को बताओ कि मेरी इतनी इन्कम है और जो मेरा बक़ाया ख़र्च है उसे compensate करो। दूसरे देशों में यही होता है कि जितनी इन्कम होती है इसके हिसाब से वे काट लेते हैं। अगर उनकी इन्कम एक लेवल तक नहीं आती तो बाक़ी सोशल मिल जाती है ताकि minimum wage इस के अनुसार पहुंच जाए। इसलिए बहुत सारों से हम चन्दा नहीं लेते । हाथ जोड़ कर कहते हैं कि जो हमारा हलाल रिज़्क़ है, जिसका हम tax देते हैं इस पर तो कम से कम चन्दा ले लें। मैं कहता हूँ कि नहीं सारे रिज़्क़ को पवित्र करो। हम ने चन्दा नहीं लेना।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला की जमाअतों को तरक़्क़ी के लिए पैसा तो चाहिए होता है और दुनिया में हर एक चीज़ पैसे से चलती है। लेकिन अल्लाह तआला ने कहा है कि जो पवित्र रिज़्क़ है वह धर्म के लिए ख़र्च होना चाहिए। इसलिए जो सूअर का कारोबार करते हैं, शराब का कारोबार करते हैं या जो क्लबों को चलाते हैं उनसे भी हम चन्दा नहीं लेते।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ुरआन शरीफ़ में लिखा हुआ है कि तुम भूके मर रहे हो तो सूअर खा सकते हो। तुम लोग तो सूअर का काम कर के सूअर खा सकते हो इसलिए कि तुम लोगों की मजबूरी थी कि भूखे मर रहे थे लेकिन जमाअत तो भूखी नहीं मर रही कि ज़रूर उन से ज़रूरी ले।

एक बच्ची ने सवाल किया कि जब इमाम नमाज़ पढ़ाते हैं तो सूरत फ़ातिहा कि बाद इमाम आमीन क्यों नहीं कहते और दूसरे बच्चे आमीन क्यों कहते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: तुम्हें किस ने कहा कि वह आमीन नहीं कहते? आमीन दो तरह होती है। ऊंची आवाज़ में भी कह देते हैं और हल्की आवाज़ में भी। जो नमाज़ी पीछे खड़े होते हैं वे सारे ऊंची आवाज़ में तो आमीन नहीं कहते। तुमने देखा होगा कि तुम बच्चे ऊंची आवाज़ में आमीन कह देते हो या कई बार बड़े जो आपके अम्मां , अब्बा हैं वे हल्के से आमीन कह देते हैं। सिर्फ आमीन कहना चाहिए। दिल में भी कह सकते हो जिस तरह तुम ज़ुहर और अस्र की नमाज़ पढ़ती हो तो ऊंची तो नहीं पढ़ती ? उस वक़्त भी दिल में हल्की आवाज़ में होंटों के अंदर ही आमीन कहते हैं। तो सारे आमीन कहते हैं। बच्चों की तरह शोर नहीं मचाते बल्कि हल्का सा कह देते हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अल्लाह तआला कोई बहरा तो नहीं है कि ऊंची आवाज़ में ही आमीन कही जाए। अगर आप हल्का सा भी कहोगे तो अल्लाह मियां को आवाज़ आ जाएगी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाया: एक बार मस्जिद में लोग नमाज़ पढ़ रहे तो आप आए और देखा कि कुछ लोग ऊंची ऊंची आवाज़ में तिलावत कर रहे हैं, और दुआएं पढ़ रहे हैं और दूसरे लोग धीरे-धीरे कर रहे थे। आप ने फ़रमाया कि दरमयान का रास्ता प्रयोग करो। अल्लाह तआला कोई बहरा नहीं है कि तुम्हारी आवाज़ न सुन सके इसलिए शोर मचा कर दुआएं न किया करो बल्कि आराम आराम से करो।

एक बच्ची ने सवाल किया कि आपको हॉलैंड कैसा लगता है?हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हॉलैंड बहुत अच्छा है

एक लज्ना ने सवाल किया कि हुज़ूर हमारे समाज में होता है कि अगर एक लड़की को depression है या anxiety है तो कहते हैं कि उसका अल्लाह तआला से सम्पर्क इतना मज़बूत नहीं है। तो आपका इस बारे में क्या विचार है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: डिप्रेशन तो दुनियादारी की वजह से है। कई बार हालात की वजह से anxiety हो जाती है , घबराहट होती है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया एक घबराहट है और एक depression है। डिप्रेशन निराशा है कि मैं मरने लगी हूँ और दुनिया ख़त्म होने लगी है। या अब कुछ नहीं हो सकता और मेरे लिए कोई ईलाज नहीं है। और उसे दुनिया की फ़िक्रें होती हैं कि मेरे पास यह नहीं, वह नहीं। अत: यह डिप्रेशन दुनिया-दारी की वजह से है। अल्लाह तआला क़ुरआन करीम मैं कहता है, اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ك कि अल्लाह के ज़िक्र से तुम्हारे दिलों को तसल्ली होती है और इतमीनान होता है। लेकिन एक घबराहट है जो बुज़ुर्गों को भी होती है। घबराहट आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी थी। जब बदर की जंग हो रही थी तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की घबराहट बहुत बहुत थी और आप रो-रो कर दुआएं कर रहे थे कि अल्लाह तआला बचा ले कि अगर ये लोग ख़त्म हो गए तो फिर तेरा नाम लेने वाला कोई नहीं होगा। आप को भी घबराहट थी, इसी लिए हज़रत अबू बक्र रज़ी अल्लाह अन्हो ने कहा कि आपको क्यों घबराहट हो रही है जबकि अल्लाह तआला ने आपके साथ विजयों का वादा किया हुआ है। पर आप ने फ़रमाया था कि अल्लाह तआला के वादे भी छिपे हुए होते हैं। क्या पता हमारा कोई क़सूर या ग़लती ऐसी हो जिससे अल्लाह तआला नाराज़ हो जाए और वे वादे आगे चले जाएं या टल जाएं, या जिस तरह मूसा की क़ौम 40 साल तक धक्के खाती रही।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: एक वह घबराहट होती है जो नेक लोगों को होती है और इसकी वजह और होती है। एक depression है जो दुनिया-दारी की वजह से हो जाती है और दुनिया की इच्छाएं इतनी होती हैं कि वे इंतिहा तक पहुंची होती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया एक फ़िक्र अपने बच्चा की यह होती है कि मेरे बच्चों की इस माहौल में तर्बीयत हो सकेगी या नहीं? मैं इस योग्य हूँ भी या नहीं ? उस के लिए इन्सान फिर अल्लाह तआला से दुआ भी करता है और करनी भी चाहिए और अल्लाह तआला धीरे-धीरे तसल्ली भी करवा देता है। तो अल्लाह तआला ने जो कहा है कि मेरा ज़िक्र करो, मुझे याद करो तो मैं तुम्हारे दिल को तसल्ली दूँगा तो वह तो अवश्य तसल्ली देगा। फिर अल्लाह तआला पर पूरा trust करना पड़ता है।

एक लज्ना ने सवाल किया कि हम अगर रोज़ का एक सिक्का सदक़ा में दें और महीना के आख़िर में उसकी रसीद बनवा लें , तो क्या यह हो सकता है कि वही सिक्का फिर प्रयोग करें या उन्ही सिक्कों को देना ज़रूरी है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हो सकता है। क्यों नहीं हो सकता? नीयत की बात है। तुम एक जगह पैसे डालती गई और महीना के आख़िर में तुमने गिना तो वे 30 पाऊंड या 40 पाऊंड या 100 पाऊंड या यूरो या जितने भी बनते हैं,वे नोट की शक्ल में सदक़ा में दे दिए। तो फिर तुम वही सके दोबारा भी

सदक़ा में डाल सकती हो। असल चीज़ तो तुम्हारी नीयत है।

एक लज्ना ने सवाल किया कि architecture के दृष्टि से मस्जिद बनाते हुए किन बातों का विचार रखना चाहिए और गुंबद और मीनार के लिए किया हिदायतें है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: कोई हिदायत नहीं। जिसका जो दिल करे वे बनाए। हम ने जो इस्लामाबाद में मस्जिद मुबारक बनाई है इस का विभिन्न architectures ने design बनाकर दिया था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जो कपड़े टांगने वाला stand होता है जो टोपियां, कोट और छतरी इत्यादि रखने के लिए प्रयोग होता है वही मस्जिद मुबारक का डिज़ाइन था। अंग्रेज़ architecture ने इस स्टैंड को उल्टा करके मस्जिद का design बना दिया। तो innovation होनी चाहिए। बस यह विचार रखो कि मीनारा और गुंबद इत्यादि ठीक हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो मस्जिद नबवी बनवाई थी इस में कौन से गुंबद या मीनारे बनवाए थे। यह सब बाद की पैदावार है। इस वक़्त छप्पड़ी डाल दी और खजूर की छत बनाई थी। इसलिए कोई ख़ास हिदायत नहीं है।

आप नई innovation कर सकती हैं और करती रहें। लेकिन अच्छी चीज़ होनी चाहिए। यहां किसी भी जमाअत अहमदिया की मस्जिद में अल्लाह तआला के नाम नहीं लिखे हुए लेकिन इस्लामाबाद की मस्जिद में हम ने बहुत सारे लिख दिए और इस के सैंटर में गुंबद आ गया और इस को छतरी की तरह बना दिया और मीनारे उस के बाहर निकाल दिए। तो यह आपकी मर्ज़ी है । बस डिज़ाइन अच्छा होना चाहिए। करें।

एक लज्ना ने सवाल किया कि कश्ती नूह में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने our lords prayer पर एतराज़ किया था तो क्या हम मानते हैं कि हज़रत ईसा दुआ किया करते थे या यह बाद में ईसाईयों ने ईजाद की है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क्या लिखा है वह पूरा वाक्य पढ़ो, फिर मैं बताऊँगा।

इस पर बच्ची ने निवेदन किया कि इस में लिखा है कि अल्लाह तआला का kingdom अभी ज़मीन पर नहीं आई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया सामने वाक्य हों तभी मैं बता सकता हूँ कि उनकी व्याख्या क्या है। इस वक़्त तो मुझे याद नहीं कि वह वाक्य क्या हैं। अगर हवाला है तो सामने लेकर आओ या फिर लिख कर भेज देना तो मैं बता दूँगा। इस वक़्त ज़बानी तो मुझे भी याद नहीं कि क्या वाक्य थे।

एक लज्ना ने सवाल किया कि इस वक़्त आपकी सबसे बड़ी क्या इच्छा है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया समस्त अहमदी और हम सब अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलने वाले बन जाएं और वैसे बन जाएं जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बनाना चाहते हैं। यह दुनिया हमारे ऊपर हावी न हो जाए।

एक बच्ची ने सवाल किया कि जब वक़्फ़ के लिए माँ बाप की दरख़ास्त आती है तो आप हर दरख़ास्त पर हाँ करते हैं या कई बार न भी करते हैं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मैं न हाँ करता हूँ , न इनकार करता हूँ। मैं इस दरख़ास्त को वक़्फ़ नौ दफ़्तर भेज देता हूँ कि वह इस को process करें। उनको यही कहा हुआ है कि तुम हर दरख़ास्त को स्वीकार कर लो। अगर बाद में कुछ बच्चे या उनके माँ बाप ठीक न रहें तो उस को list मैं से निकाल देते हैं।

एक बच्ची ने सवाल किया कि अल्लाह तआला जिस तरह फ़रमाता है कि वह किसी भी जान पर उसकी ताक़त से बढ़कर बोझ नहीं डालता लेकिन दुनिया में हम देखते हैं कि बहुत से लोग बीमारी या समाज की तंगी की वजह से फ़ौत हो जाते हैं तो ऐसा क्यों होता है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: वह यह नहीं जानते कि अल्लाह तआला ने इस से आगे क्या लिखा हुआ है। इसके आगे भी पढ़ो कि क्या लिखा है। इसके आगे लिखा है कि لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ। जिसने जो हरकत की इस के अनुसार उस को बदला मिल जाता है। अल्लाह तआला तो बोझ नहीं डालता लेकिन इन्सान अपने आप पर ज़ुलम करता है। वह जो कमाता है इस को इस का बदला भुगतना पड़ता है। इसी लिए आगे दुआ सिखाई कि , जो हम से पहले लोग गुज़रे हैं, उन पर जो मुश्किलें आई हैं वे मुश्किलें हम पर न आएं और हमारे ऐसे हालात न हो जाएं और हम ऐसी हरकतें करने न लग जाएं और फिर अल्लाह तआला की नाराज़गी का कारण बन कर सज़ाएं मिलने लग जाएं या हम से ऐसी बातें न हों। अल्लाह हमें माफ़ कर दे, हम पर रहम कर दे और उन चीज़ों से हमें बचा। यह दुआएं भी अल्लाह तआला ने हमें इसी लिए सिखाई हैं। तुम लोग दुआएं करते रहो और उन बुराईयों से बचते रहो ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: देखें एक क़ानून क़ुदरत है अर्थात law of nature है, और एक कानून शरीयत अर्थात law of shariat है। अगर किसी ने ज़हर खा लिया है तो क़ानून क़ुदरत ने इस का नतीजा निकालना है और उसने मरना है। यह नहीं कि मैं मुसलमान हूँ ,इसलिए मैं ज़हर खा कर नहीं मरूँगा और ईसाई मर जाए गाया यहूदी मर जाएगा। जो अल्लाह तआला को नहीं मानता और atheist है उसने मेहनत की है तो ज़ाहिर है वे अच्छे नम्बर ले लेगा और मुसलमान कह दे कि मैं मुसलमान हूँ और बिना पढ़े मेरे अच्छे नम्बर आ जाऐंगे तो वह नहीं आएँगे। अत: जब इन्सान ख़ुद ऐसी हरकतें करे तो फिर उस को इस के बदले में भुगतना पड़ता है। बाक़ी बीमारी इत्यादि तो अल्लाह तआला ने रखी हुई है। हर चीज़ साथ साथ है। क्या नबी बीमार नहीं होते आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को किसी ने हाथ लगाया आप का जिस्म बड़ा सख़्त गर्म था। इस पर इस ने पूछा कि क्या आप को भी बुख़ार होता है? इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया मैं भी इन्सान हूँ , मुझे भी बुख़ार होता है और बहुत अधिक होता है। तुम लोग इतना बर्दाश्त भी नहीं कर सकते। तो यह चीज़ें , तकलीफ़ें भी साथ साथ रखी हुई हैं और साथ साथ दुनिया का क़ानून भी चल रहा है। हाँ इन्सान दुआ करता रहे और उनसे बचने की कोशिश भी करे तो बहुत सारे लाभ भी हैं और यह कहना कि किसी ने मरना नहीं है या किसी ने जाना नहीं है ठीक नहीं। अल्लाह तआला ने ख़ुद कहा है कुछ लोगों को मैं बचपन में उठा लेता हूँ, कुछ को जवानी में, कुछ को बड़ी उम्र देता हूँ , कुछ को इतनी उम्र देता हूँ कि उनमें बचपन दोबारा आ जाता है यानी भूलने लग जाते हैं। यह बीमारियां और भूलने की बीमारी बूढ़े हो कर हो जाती है। इसलिए अल्लाह तआला से फ़ज़ल मांगते रहना चाहिए। अत: इस का यही अर्थ है कि अगर ग़लत हरकतें या ग़लत काम करोगे तो इस का नतीजा ग़लत निकलेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने जो क़ुरआन करीम में हुक्म दिए हैं वे ऐसे हुक्म हैं जो इन्सान की ताक़त से बढ़कर नहीं हैं। पहले अल्लाह तआला के हुक्म तलाश करो और फिर उन पर अनुकरण करो। इस के बाद शिकवा करना कि अधिक बोझ है या नहीं

वाकिफ़ात नौ बच्चियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह क्लास 6 बजकर 55 मिनट तक जारी रही।

(शेष...................)

☆ ☆ ☆

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 21 May 2020 Issue No. 21

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

आप(स) के आचरण तो क़ुरआन हैं

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ۔(आले इम्रान 32)

अनुवाद: तू कह दे कि अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरा अनुकरण करो ,अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा।

عَنْ اَبِيْ صَالِحٍ عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّمَا بُعِثْتُ لِاُتَمِّمَ مَكَارِمَ الْاَخْلَاقِ۔

(सुनन कुबारा लिल-बहीकी किताबुल शहादात बयान मकारिमुल ईख़लाक़ भाग नम्बर 10 पृष्ठ 92)

अनुवाद हज़रत अबू हुरैरह रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :मुझे तो उच्च आचरण की पूर्णता के लिए मबऊस किया गया है।

हज़रत साद बिन हिशाम वर्णन करते हैं कि मैं हज़रत आयशा रज़ि के पास गया और निवेदन की कि हे उम्मुल मोमिनीन मुझे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण के बारे में कुछ बताएं। उन्होंने फ़रमाया ۔كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْاٰنَ(मस्नद अहमद हंबल भाग 8 पृष्ठ 144)आप के आचरण क़ुरआन के ठीक अनुसार थे इसी तरह फ़रमाया क्या आप क़ुरआन नहीं पढ़ते। अल्लाह तआला ने आप के बारे में फ़रमाया है।اِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (क़लम: 5)

(मस्नद अहमद बिन हंबल ,हदीस नम्बर 24460)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

" आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी एक महान सफल ज़िन्दगी है। आप क्या अपने उच्च आचरण की दृष्टि से और क्या अपनी क़ुव्वत अक़्दसी की दृष्टि से और ऊंची हिम्मत के और क्या अपनी शिक्षा की ख़ूबी और सम्पूर्णता की दृष्टि से और क्या अपने सम्पूर्ण नमूना और दुआओं की क़बूलीयत की दृष्टि से अत: हर तरह और हर पहलू में चमकते हुए ग्वाहियां और निशान अपने साथ रखते हैं कि जिन को देखकर एक मूर्ख से मुर्ख इन्सान भी बशर्तिके उस के दिल में व्यर्थ का ग़ुस्सा और शत्रुता न हो साफ़ तौर पर मान लेता है कि आप تَخَلَّقُوْا بِاَخْلَاقِ اللّٰهِ का सम्पूर्ण नमूना और कामिल हैं।"(अलहकम 10 अप्रैल 1902 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"क़ुरआन करीम में जिस तरह लिखा है कि अल्लाह तआला की इबादत करो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इबादत की। क़ुरआन करीम में जिस तरह लिखा कि बन्दों के हक़ अदा करो। आप ने बन्दों के हुक़ूक़ अदा किए। क़ुरआन करीम में जिन बातों को करने का हुक्म दिया गया आप ने इन बातों और हुक्मों पर सम्पूर्ण रूप से अमल किया ,उनको किया ,इनकी अदायगी की। क़ुरआन करीम ने रोज़ों का हुक्म दिया ,सदक़ों का हुक्म दिया , ज़कात का हुक्म दिया। आप ई ने रोज़ों , सदक़ों और ज़कात के उच्च स्तर स्थापित कर दिए । क़ुरआन करीम ने समाज में लोगों के साथ नरमी का हुक्म दिया तो आप ने नर्मी की वह इंतिहा की जिसकी उदाहरण नहीं मिल सकता। अपने जानी दुश्मनों को माफ़ फ़र्मा दिया अगर अल्लाह तआला ने परिवेश के सुधार के लिए सख़्ती का हुक्म दिया तो आप ने उस की पूरी इताअत तथा आज्ञा पालन की। अत: कौन सा हुक्म है क़ुरआन करीम का जिसकी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने न सिर्फ पूरी तरह बल्कि उच्च स्तर स्थापित करते हुए अनुकरण न किया हो।

हज़रत मुस्लेह मौऊद ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और क़ुरआन के आपस के सम्बन्ध की बहुत अच्छी मिसाल पेश की है कि कुरआन करीम और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दो मोती हैं जो एक ही सीप से एक साथ निकले हैं। क़ुरआन करीम की शिक्षा को जानना चाहते हो तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी को देख लो और अगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी के बारे में मालूमात लेना चाहते हो ,अगर यह देखना चाहते हो कि आप के सुब्ह तथा शान और रात-दिन किस तरह गुज़रते थे तो क़ुरआन करीम के समस्त आदेशों को मना किए गए कामों पढ़ लो, आप की सीरत सामने आ जाएगी। (ख़ुत्बात मसरूर भाग 3 पृष्ठ 131,130)

दुआ है कि अल्लाह ताला हमें रमज़ानुल मुबारक में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उच्च आचरण को अपनाने का आदी बनाए। आमीन

नमाज़ तहज्जुद

وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ عَسٰى اَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا

(बनी इस्राईल 80)

अनुवाद: रात के एक हिस्सा में भी इस क़ुरआन के साथ तहज्जुद पढ़ा कर यह तेरे लिए नफ़ल के रूप में पर होगा। क़रीब है कि तेरा रब तुझे मक़ाम महमूद पर फ़ाइज़ कर दे

عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّيْ مِنَ اللَّيْلِ اِحْدٰى عَشْرَةَ رَكْعَةً فَاِذَا طَلَعَ الْفَجْرُ صَلّٰى رَكْعَتَيْنِ خَفِيْفَتَيْنِ، ثُمَّ اضْطَجَعَ عَلٰى شِقِّهِ الْاَيْمَنِ حَتّٰى يَجِيءَ الْمُؤَذِّنُ فَيُؤْذِنَهٗ۔

(बुख़ारी किताबुल दावात)

अनुवाद हज़रत आयशा रज़ि वर्णन करती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात के पिछले हिस्सा में ग्यारह रकअतें तहज्जुद पढ़ते। जब फ़ज्र उदय होती तो दो हल्की रकातें पढ़ते और फिर अपने दाएं पहलू पर लेट जाते। जब मुअज़्ज़न नमाज़ के लिए सूचना देता तो आप नमाज़ पढ़ाने तशरीफ़ ले जाते ।

عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُصَلِّيْ مِنَ اللَّيْلِ مَثْنٰى مَثْنٰى وَيُوْتِرُ بِرَكْعَةٍ مِّنْ اٰخِرِ اللَّيْلِ، وَيُصَلِّيْ الرَّكْعَتَيْنِ قَبْلَ صَلٰوةِ الْغَدَاةِ وَكَاَنَّ الْاَذَانَ بِاُذُنَيْهِ۔

(मुस्लिम किताबुस्सलात)

अनुवाद: हज़रत इब्न उमर रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अल्लाह अलैहि वसल्लम रात की अर्थात तहज्जुद की नमाज़ दो दो रकअत कर के पढ़ते थे। और फिर आख़िर में एक रकअत पढ़ कर उनको वितर बना लेते। सुबह की नमाज़ से पहले दो रकअतें पढ़ते थे और इतनी हल्की पढ़ते मानो इक़ामत शुरू हो चुकी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

" हमारी जमअत को चाहिए कि तहज्जुद की नमाज़ को लाज़िम कर लें। जो ज़्यादा नहीं दो ही रकअत पढ़ ले,क्योंकि उस को दुआ करने का अवसर बहरहाल मिल जाएगा उस वक़्त की दुआओं में एक विशेष प्रभाव होता है,क्योंकि वे सच्चे दर्द और जोश से निकलती हैं। जब तक एक ख़ास वेदना और दर्द दिल में न हो। इस वक़्त तक एक शख़्स आराम को छोड़कर बेदार कब हो सकता है? अत: इस वक़्त का उठना ही एक दिल में दर्द पैदा कर देता है जिससे दुआ में रिक़्क़त और व्याकुलता की अवस्था पैदा हो जाती है और यही व्याकुलता और परेशानी दुआ की कुबूलियत का कारण हो जाते हैं। (मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 182)

हमारे प्यारे इमाम सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

" आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "तुम्हें नमाज़ तहज्जुद का प्रबन्ध करना चाहिए क्योंकि यह पिछले सालहीन का तरीक़ा रहा है और क़ुरब इलाही का माध्यम है। यह गुनाहों की आदत से रोकती है और बुराईयों को ख़त्म करती है और जिस्मानी बीमारियों से बचाती है।(सुनन अत्तिर्मज़ी किताबुल दावात अध्याय112 हदीस 3549) अत: न केवल सिर्फ़ रुहानी ईलाज है बल्कि जिस्मानी ईलाज भी है।" (ख़ुत्बा जुम्अ: 2 जनवरी 2015 ई ख़ुत्बात मसरूर भाग 13 पृष्ठ 8)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें रोज़ाना नमाज़ तहज्जुद अदा कर के मक़ाम महमूद हासिल करने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन

☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆
☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad